mentioned it, I got up and said that we would immediately make inquiries and report back to this House as soon as we were in a position to give you somemore information than what Mr. Ahluwalia has already been good enough to give us. I do not think that the House or any member of the House can deny that it is a very grave matter. It is a serious matter. But the gravity or the seriousness of the matter does not necessarily require that the sound level should be raised or the blood pressure should be raised. We arc all here. I hope you understand our difficulties. Three Ministers sitting in this House are not strapped by some wires to every other Minister. The relevant Minister of the Government must have been informed. Supposing the Minister receives the information sitting in his chamber, what docs he do immediately? He will immediately get into action and try to ascertain the facts so that he would be able to take some proper action, whether preventive action or punitive action or some other action. But, do you expect the Minister immediately, the moment he hears something, to run from his chamber, run to this House, run to the other House, like headless chicken, to come forth and make some kind of statement? Please understand that a responsible Government will make enquiries and after enquiries, ascertain the facts. But I cannot promise as my learned friends here said—"You tell us who is responsible". It requires a detailed inquiry into the facts. It requires, probably, looking into the evidence, hearing more than one person. And we cannot straightway usurp the functions of a duly elected Government there. But I agree that it is a sensitive State, it is a border State and the Centre has a role to play. But Mr. Ahluwalia and all Members of this House should feel assured that the Government will not be wanting in any measures which are necessary to meet this menace, either this specific menance or the menance in general. We will report back to the House the moment we are ready. ...*(Interruption);*

SHRI S.S. AHLUWALIA: Today.

SHRI RAM JETHMALANI: We should be ready to tell you something which is important. *(Interruptions).*

SHRI S.S. AHLUWALIA:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANATAN BISI): Mr. Ahluwalia, please sit down. *(Interruptions).* It will not go on record. What Mr. Ahluwalia says will not go on record.

SHRI RAM JETHMALANI: The relevant Minister of the government will know. If you have any pleasure in saying that the Government does not know, you are welcome to say that. But I can only tell you that the relevant Minister would know and I am sure that the relevant Minister already must have acted.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANATAN BISI): Shri Janeshwar Misra.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS—CONTD.

श्री जनेश्वर मिश्र : उपसभाध्यक्ष महोदय, मुझे बेहद पीड़ा है कि महामहिम राष्ट्रपति महोदय के भाषा का जो अंश लेकर मैं चर्चा उठा रहा था कि प्रत्येक नागरिक को सुरक्षित महसूस करने और भयमुक्त रहने का अधिकार हैं, उसी समय अहलुवालिया जी ने यह बात छेड़ दी कि एक राज्य सरकार का स्वास्थ्य मंत्री कत्ल कर दिया गया। एक तरफ तो राष्ट्रपति जी हम लोगों को संबोधित करते समय कहे कि देश का हर नागरिक भयमुक्त जिंदगी जीएगा।

और दूसरी तरफ हम ही लोगों के बीच से—हफ्ता भर भी उस भाषण को न गुजरा हो-तब तक कोई न कोई उठा लिया जाए, यह बहुत ही तकलीफ और क्षोभ की बात हैं। मै नहीं जानता की सरकार ने जब राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के लिए यह वाक्य लिखने को कलम चलाई तो उस समय त्रिपुरा की स्थिति सरकार की निगाह में थी या नहीं। मैं तो बात उठा रहा था कि 20 करोड़ आबादी आपके सत्ता में आने के बाद दहशत में हैं और जिस मुल्क में 20 करोड़ या 25 करोड़ लोग भययुक्त जिन्दगी जी रहें हों, सरकार आपकी जैसी भी चलती हों, वह कौम मजबूत नहीं बन सकती हैं। उसका बहुत बड़ा नुकसान हो जाएगा। उन लोगों को आश्वस्त करने के लिए क्या कदम उठाने जा रहे हैं , उनके दिलों में जो चोट

*Not recorded.

लगी हैं उसको दूर करने के लिए कौन सी मरहम पट्टी करने जा रहे हैं, यह आश्वासन मैं मांग रहा था कि तब तक एक राज्य सरकार के मंत्री का कत्ल हो गया, इस बात की सूचना इस सदन में आ गयी। मैं बैठ गया। मैं इसलिए नहीं बैठा कि अहलुवालिया जी हमारे मित्र हैं या हम उनका सम्मान करते हैं। मैं सोचता था कि सरकार की तरफ से कोई जवाब आएगा। माननीय जेठमलानी जी जिनकी मैं इज्जत करता हूं, उम्र में हमसे बड़े हैं, इन्होने आधा खड़े होकर और आधा बैठे-बैठे जवाब दे दिया कि "गवर्नमेंट बिल लुक इनटू इट"। मैं थोड़ी देर के लिएचिंतित हो गया कि हम लोग कोइ फरियाद लेकर तो नहीं आए। एक मिनिस्टर मारा गया और जब कभी भी कोई मंत्री मारा जाता हैं या बड़ा आदमी मारा जाता हैं तो आम आदमी सड़क पर जो मामूली जिंदगी जीता हैं, वह डर जाता हैं कि जब यही मार दिया गया तो हमारी दुर्दशा क्या होगी? और यह हालत गांधी जी के मरने के बाद से हैं। आजादी मिलने के बाद गांधी को जब गोली से उड़ाया गया तो पूरा हिन्दुस्तान दहशत में आ गया कि अब हम लोगों का क्या होगा? और तब से – चाहे वह इंदिरा जी मारी गयीं हों, चाहे राजीव जी मारे गये हों—आम आदमी सड़क पर काम करता हैं, जो किसी राजनैतिक पार्टी का नेता नहीं होता, वह अपनी जिन्दगी जीना चाहता हैं, अपना काम करना चाहता हैं। लेकिन जो लोग देश के निर्माता कहलाते हैं—चाहे छोटे लेबल पर या बड़े लेबल पर, सूबे में या देश में – उन पर हमले होने लगते हैं तो आम आदमी दहशत खा जाता हैं। हम चाहते थे कि सरकार इसको गंभीरता से लेती लेकिन यह बात हो नहीं पाई। मैं फिर से दूसरी बात छेड़ रहा हूं कि आज भी समाज का जो अल्पसंख्यक समुदाय हैं, वह दहशत में हैं। लोकतंत्र का मतलब बहुसंख्यक की हुकूमत नहीं हैं, बहुमत की हुकुमत हैं और उस नाम पर जोड़-तोड़ किया करते हैं तो हिन्दुस्तान की जनता अनाड़ी नहीं हैं। धन्यवाद प्रस्ताव राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर नहीं, धन्यवाद प्रस्ताव इस सदन में भारत की महान जनता को होना चाहिए था। जब इंदिरा जी हटी थी, मोरारजी भाई कुर्सी पर बैठे थे, अटल जी विदेश मंत्री थे, विशेष प्रस्ताव पर भाषण हो रहा था तो अटल जी ने कहा था कि घड़ी की सुई कभी इधर से उधर चली आती हैं। हमको याद है कि जब बहुत छेड़खानी हो रही थी तो सभापति जी बार-बार घड़ी की तरफ देखा करते थे लेकिन घड़ी की सूई एक छोटी रहेगी, एक बड़ी रहेगी

तभी तो इधर से उधर जाने पर मालूम पड़ेगा कि क्या वजह हैं कि हिन्दुस्तान की महान जनता ने अब की भारतीय लोकतंत्र की घड़ी की दोनों सूइंया बराबर, की नौबत पर, लाकर खड़ी कर दी हैं। न तो इन लोगों को हुकुमत करने की इजाजत दी, न जो लोग इधर बैठे हैं, इनको हुकुमत करने की इजाजत दी।

श्री बंगारू लक्ष्मण (गुजरात) **:** अटल जी ने पैंडुलम की बात कहीं थी।

श्री जनेश्वर मिश्र : तो मैं कह रहा था कि इजाजत नहीं दी। बहुमत नहीं हैं। एक शब्द का इस्तेमाल बार-बार मैं संसद में और संसद के बाहर भी सुन रहा हूं कि जनादेश मिला हैं। जोड़-तोड़ को जनादेश नहीं कहा जाता और जिन लोगों को यह भ्रम हैं कि जोड़-तोड़ को जनादेश कहा जाता हैं—हम लोगों ने भी जोड़-तोड़ वाली सरकार चलायी थी लेकिन हमने कभी नहीं कहा म.प. 3.00

कि हमको जनादेश मिला है। हमको अच्छी तरह से याद हैं कि जिन बैसाखियों पर हम चलते थे 1977 के जमाने के बाद। तब कई तरह के ख्यालात के लोग थे जो दो-ढाई साल में बिखर गए। तो यह जोड़-तोड़ की सरकारें लोकतंत्र में लम्बे समय तक नहीं चला करतीं। कम समय में कोई सा बड़ा काम कर दिया जाए, जिस काम के जरिए देश की जनता को संदेश चला जाए कि जो लोग कुर्सी पर बैठे हैं वह काम करने वाले लोग हैं। केवल ढपोलशंखी बयान न दें। मैं इसमें कृषि के मामले में पढ़ रहा था। कृषि के मामले में, मैं राष्ट्रपति पुनर्निर्माण में श्रमिकों की समान भागेदारी को सुनिश्चित करेगी। कृषि श्रमिकों के, जो अधिकतर असंगठित हैं, के हितों का विशेष ध्यान रखा जाएगा। इसके बाद वाली लाइन में 22 नम्बर पर कहा हैं कि कृषि के क्षेत्र में धन लगाने में लगातार कमी करते रहने के कारण इसे हानि उठानी पड़ी है। इसे माने कृषि करते रहने के कारण इसे हानि उठानी पड़ी हैं। इसे माने कृषि को या कृषि श्रमिकों को, यह तय नहीं हैं। सरकार इस कमी को रोकेगी और हमारी अर्थ-व्यवस्था के इस महत्वपूर्ण खण्ड के लिए योजना राशि का 7 सैकड़ा धन निर्धारित करेगी, आर्थिक सहायता जारी रहेगी। जिन्हे यह सहायता मिलनी चाहिए, उनके बारे में पहचान करने के लक्ष्य को बेहतर बनाया जाएगा। जब यह भाषा आ जाती हैं कि जिनको यह पैसा देना हैं उनकी पहचान करने का लक्ष्य निर्धारित करने का तरीका बेहतर बनाया जाएगा तो भ्रष्टाचार यहीं से आ जाता हैं। फिर वह पैसा किसानों को नहीं मिलता, वह

tai $ पैसा इन्तजाम पर चला जाता हैं लेकिन उस पर भी हमारी सरकार किसानों को समृद्धि का लाभ प्राप्त करने के लिए उन्हे एक सशक्त तथा आत्म-विश्वासी समुदाय के रूप में पुर्नस्थापित करने के लिए प्रतिबद्व हैं। इस भाषण की रोशनाई अभी सूखी भी नहीं होगी राष्ट्रपति जी ने जिस पर हस्ताक्षर किए होंगे और कल ही जंतर-मंतर पर हिन्दुस्तान के गेहूं पैदा करने वाले किसान प्रदर्शन करने चले आए। इस सरकार ने जो 455 रूपया एक क्विंटल गेहूं का दाम तय किया हैं वह हमारे लिए पूरा नहीं पड़ता हैं। कृषि वैज्ञानिक, कृषि अनुसंधान करने वाले लोगों की सिफारिशें भी सुन ली जायें तो हमको साढ़े आठ सौ रूपये क्विंटल के हिसाब से गेहूं के दाम तय करने पड़ेगे। किसानों को गिरफ्तार किया गया हैं। एक तरफ राष्ट्रपति जी किसानों के बारे में यह आश्वासन दें कि तुम जो पैदा करोगे उससे मुनाफा कमाओगे, सरकार ऐसी नीति बनाने जा रही हैं, अगर यह आश्वासन इस सरकार ने राष्ट्रपति महोदय के मुंह से कहलवाया हैं। जो जंतर-मंतर पर किसानों की गिरफ्तारी नहीं होनी चाहिए थी। इसलिए मैं सरकार से मांग करूंगा कि जब आप धन्यवाद प्रस्ताव पर विपक्ष का भी समर्थन लेना चाहते हैं और जब हिन्दुस्तान का किसान दिल्ली में दस्तक देने आया हैं कि उसके गेहूं का दाम साढ़े आठ सौ रूपये क्विंटल गेहूं का भाव तय किया जाए तो रबी की फसल का भाव तय करते समय उसकी मांग मान लेंगे तो आपके धन्यवाद प्रस्ताव पर हमारे जैसा आदमी भी हाथ उठावेगा। किसान को सताया जाएगा संसद में बैठकर, और मैं यह नहीं कहता कि यही सरकार सताने वाली हैं। जब कभी भी दिल्ली में कोई सरकार बैठी हैं, उसने कभी भी किसान के दर्द को समझा नहीं हैं। उसका भाव कितना चढ़ता हैं? जब वह खाद खरीदता हैं, जब वह मजदूर लगाता हैं, जब वह ट्रेक्टर खरीदता हैं, जब वह पानी लगाता हैं, जब वह डीजल खरीदता है, उस हिसाब से उसकी पैदावार नहीं आती हैं। हमारी गांव में जो एक मामूली पान की दुकान खोलता हैं तो वह भी मुनाफा कमाना चाहता हैं। लेकिन गांव का किसान साल भर तक अपने खेत में मेहनत करने के बाद जो फसल तैयार करता हैं वह घाटे की फसल हुआ करती हैं। यह आज से नहीं, युगो से सिलसिला चल रहा हैं। जब हमने राष्ट्रपति के मुंह से सेन्ट्रल हाल में यह बात सुनी थीं तो हमारे दिल को तसल्ली हुई थी कि शायद यह नई सरकार किसानों की फसल के दाम के बारे में, उनकी पैदावार के दाम के बारे मे कोई एक नीति लेकर जल्दी ही आ जायेगी। धन्यवाद प्रस्ताव के पहले कुछ उनको सुनने को मिलेगा, लेकिन मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता हैं कि उसके बारे में कहीं कोई गुंजाइश नहीं हैं। मैं यह नहीं कहता कि तीन दिनों के अन्दर ही कुछ हो जायेगा लेकिन मैं यह जरूर चाहूंगा कि जब कभी प्रधान मंत्री जी जवाब दें या सुन्दर सिंह भंडारी जी जवाब दें या नेता सदन जवाब दें तो वह यह जरूर कहें कि किसान को भी ऐसा दाम दिया जायेगा जिससे उसको लाभ होगा, वरना देश में जो दूसरा धंधा करने वाले हैं, वह धनी होते जायेंगे। मैंने जान-बूझ करके पान देने वाले, मूंगफली बेचने वाले की ओर इशारा किया हैं। मैंने जानबूझकर किसानों की तरफ इशारा किया। मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि किसान कभी भी धनी नहीं हो सकता। मैं जानता हूं कि गांव में किसी भी किसान का पक्का मकान नहीं हैं। उसका बेटा अगर दूध बेचने के लिए धनबाद चला जाए तो लौटने के बाद पक्का मकान भले ही बना लें लेकिन गेहूं बेचकर वह पक्का मकान बना सकता। राजा-महाराजाओं को छोड़ दिया जाए तो उनकी ऐसी स्थिति है। इसमें कहीं न कहीं कोई आर्थिक पेंच है। जब कभी ऐसी कलम राष्ट्रपति जी के मुंह से निकलवाई गई हैं तो इस तरह की बात बहुत सतर्क होकर सरकारें निकाला करें। चाहे वह अटल जी की सरकार हों, चाहे किसी का माल, कच्चे माल को तैयार करने वाला किसान का माल जिस भाव पर बिकता हैं उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती हैं कि उसका क्या भाव होता हैं। हमको याद हैं कि पिछले साल जब प्याज की फसल तैयार हुई थी तो वह बाजार में दो रूपये किलों बिक रहा था और जिन दिनों चुनाव चल रहे थे और प्याज की फसल खत्म होने वाली थी तो उस समय वह 30 रूपये किलो हो गया। दो फसलों के बीच में खेती की पैदावार के भाव कितना चढ़ते उतरते हैं, उसके बारे में कोई भी सरकार कोई नीति लेकर नहीं आई। खेती की पैदावार के लिए एक आम आदमी को जितना पसीना बहाना पड़ता हैं, पसीना भी हैं और अगर पूंजी भी है तो कारखाने में पैंदा करने के लिए जितनी पूंजी लगानी पड़ती हैं और जितना पसीना बहाना पड़ता हैं, इन दोनों के अनुपात के बारे में कभी कोई नीति नहीं आई। मैं कहना चाहता हूं कि एक रेशियों दोनों का बांधा जाए। लेकिन इस पर कभी कोई बहस नही हुई है। इस पर बहस होनी चाहिए कि खेती कि पैदावार, 12 घंटे, 20 घंटे मेहनत करने के बाद अगर उसमें आठ आना मुनाफा पाते हैं तो कारखाने के पैदावार जो 12 घंटे, 20 घंटे की मेहनत और पूंजी लगाने के बाद होती हैं वह 12 आने के बजाए 2 रूपये, 3 रूपये उसें मिले। दोनो के बीच एक रेशियो होना चाहिए नही तो जो कारखाने चलाने वाले हैं, जो दूसरा धंधा करने वालें हैं वे धनी हो जायेंगे और खेती से पैदावार करने वाले गरीब हो जायेंगे।

पहले की सरकारें बोलती थीं कि खेती से जो पैदावार होती हैं वह पैदावार क्योंकि सब खाते है, अकेले किसान नहीं खाता इसलिए उसके दामों को बांध कर रखना जरूरी हैं। 455 या 500 रूपये के ऊपर गेहूं के दाम नहीं बढ़ेगे क्योकि गेहू किसान भी खाएगा, मजदूर भी खाएगा, बाबू भी खाएगा और इंजीनियर भी खाएगा। यह सच हैं कि सब की जिंदगी के लिए कृषि पैदावार जरूरी हैं लेकिन क्या राष्ट्र की जिंदगी के लिए फैशन जरूरी हैं? हम लोग पार्लियामेंट के मेंबर लोगों को लोकतंत्र की रक्षा के नाम पर सस्ते रेट पर सामान मिलता हैं। पल्टन की कैटीन में, बाजार में जो घंडी 900 रूपए की बिकती हैं, पटन की कैंटीन में वह 300-350 रूपए में मिल जाया करती हैं। अगर किसान की सेवा भी सब के लिए जरूरी हैं तो उनको कपड़ा-लता या दवाइंया सस्ते दामों पर भले ही न दें लेकिन जिन चीजों का इस्तेमाल वह खेती में करता हैं वह उसको आधे रेट पर, कम रेट पर दे दे ताकि वह अपनी पैदावार को कम रेट पर, आधे रेट पर दे सकें। कहीं तो न्याय की भावना होनी चाहिए। मैंने जब यह राष्ट्रपति महोदय के मुंह से सुना तो मुझे थोड़ी देर के लिए तसल्ली हुई लेकिन जब यहां पर किसानों को गिरफ्तार किया गया हैं – अभी जय प्रदा जी बोल रही थीं कि कपास पैदा करने वाले किसान आत्मदाह कर रहे है। वहां चन्द्रबाबू नायडु का राज हैं लेकिन इसके लिए दिल्ली की सरकार भी जिम्मेदार हैं जो खेती की पैदावार करने वाले किसान अपनी भरपाई नहीं पा सके। इसलिए किसान लोग खुदखुशी करने लगे है। ऐसी हालत में समाज के एक बहुत बड़े वर्ग की क्या हालत हैं इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती हैं। यहां पर सत्ता पक्ष की तरफ से एक मेंबर ने सवाल उठाया है कि हिमालय की तराई में बहुत अच्छी किस्म का बासमती चावल निकलता हैं। लेकिन बासमती चावल का अमेरिका की एक कंपनी "राइस टेक" ने पेटेंट करा लिया हैं। मैं व्यापारियों की तरफ से नहीं बोलना चाहता लेकिन बासमती पैदा करने वाले किसानों की तरफ से जो नैनीताल, रूद्रपुर,मसूरी से लेकर देहारादून तक के एक बड़े इलाके में इसको पैदा करते हैं उनकी तरफ से कहना चाहता हू कि क्या खुशबूदार चावल प्रकृति की देन हैं। पहाड़ की तराई में यह निकलता हैं ऐसा नहीं हैं कि मैदानी इलाके में वह चावल पैदा किया जाए और अमेरिका की वह कंपनी उसका पेटेंट कराने जा रही हैं। इससे किसानों को इसका लाभकारी मूल्य नहीं मिलेगा। एक तरफ से राष्ट्रपति के मुंह से यह कहलाया गया हैं और दूसरी तरफ बासमती से लेकर कपास पैदा करने वाले किसान आत्मदाह कर रहे हैं और गेहूं पैदा करने वाले किसानों को जंतर-मंतर पर गिरफ्तार किया जा रहा है। यह किस बात का द्योतक हैं? यह सरकार किसान विरोधी हैं या किसान समर्थक हैं। यह खुद अपने गिरेबान में मुंह डाल कर देखें कि यह क्या करना चाहती हैं। बात कुछ और काम कुछ, यह दोनों नहीं चलेंगे। अगर यह जिन्दा सरकार होती तो उन किसानों के बीच में जंतर-मंतर चली जाती। इतना ही कह देती कि अगर तुम्हारा पेट नहीं भरता है सरकारी नीतियां की घोषणा के बाद वह किसान कोई बेतर्क बात नहीं कर रहे थे। वह कह रहे थे कि कृषि वैज्ञानिकों से सलाह ले लो, बड़े रिसर्च स्कलार्ज से, विश्व-विद्यालयों के प्रोफेसरों से बात कर लो, तब हमारा भाव तय करो। जब वह 850 रूपये क्विंटल कह रहे थे तो सरकार यह आश्वासन दे देती कि गवर्नमेंट विल लुक इंटू दा मेटर। यह भाषा अब बहुत देर तक नहीं चलेगी। यह भाषा गवर्नमेंट की तरफ से चाहे हमारी पार्टी की सरकार हो या इनकी सरकार हो चलती रहेगी तो कहीं कोई किसी राज्य की राजधानी में मंत्री मारा जाएगा, कहीं दिल्ली राजधानी में किसान पीटा जाएगा, गिरफ्तार किया जाएगा। मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि यह बातें अभी भी सरकार समझ नहीं पा रही हैं। मैं इससे बहुत उम्मीद भी नहीं करता। चार दिनों की सरकार हैं। अभी वह बहुत सी बातों पर होम वर्क भी नहीं कर पाई हैं। लेकिन हम चाहेंगे कि राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण के सवाल पर धन्यवा प्रस्ताव लेते समय सरकार अपनी तरफ से स्पष्टीकरण दे। इसमें एक बात और हैं। ....(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : टाइम कम हैं। आपके अभी दो स्पीकर और हैं।

श्री जनेश्वर मिश्र : ठीक हैं, हम जल्दी खत्म करेंगे। सरकार ने कहा हैं कि समाज में अन्तिम आदमी की हिफाज़त। आज ही मैं "राष्ट्रीय सहारा" अखबार पढ़ रहा था। समाज में अन्तिम आदमी जाति व्यवस्था के आधार पर समाज का मुसाहार वर्ग होता हैं। "राष्ट्रीय सहारा" में लिखा हुआ हैं कि आजमगढ़ जिले की बगल में एक मऊ जिला हैं, मऊ जिले में 6 मुसाहार औरतों के साथ सार्वजानिक बलात्कार हुआ, अगड़ी जाति के लोगों ने किया। वह मुसाहार रिपोर्ट लिखाने गए थाने में, उनको डांट कर भगा दिया गया। केवल समाज की जाति व्यवस्था नर-नारी जिसकी समानता के बारे में खोबरागड़े जी इस अभिभाषण के बीच से कोई कलम निकाल कर के हम लोगों को सुना रहे थे नर-नारी समता का सवाल, महिला के सम्मान का सवाल सार्वजानिक दौलत के मामले में, जन्म और जाति के मामले में मारी हुई नारी को सार्वजानिक रूप से अपमानित किया जाए, उसके सम्मान को धक्का लगाया जाए और हम संसद में बैठे कर

के समाज के अन्तिम आदमी की सुरक्षा की गारंटी का वादा दोहराते रहे, अंत्योदय की बात करते रहे, हम समझते हैं यह बहुत शर्मनाक बात हैं। ....(**व्यवधान**)..

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): Shri Janeshwar Misra, will you just yield a minute? Taking advantage of the presence of the Home Minister, can I request the hon. Vice-Chairman to request the hon. Home Minister to inform the House whether it is a fact that the dastardly murder of the Health Minister of Tripura has taken place this morning?

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI L.K. ADVANI): Mr. VicerChairman, Sir, I have just come to know about it. I have sought all necessary information. All that I can say is that it is a shocking event. If it is true, so far as the Central Government is concerned, it would be willing to give whatever assistance that is necessary in the matter. There will be nothing lacking ...*{Interruptions)* In the debate on the Motion of Thanks on President's Address, I had mentioned the fact that the internal security environment has been deteriorating day by day in various parts of the country. It is a matter of great concern. And on top of that comes this sad news. AU that I can say is that we are getting all the necessary information. ..*(Interruptions)*

SHRI S.S. AHLUWALIA: What about the statement?

SHRI L.K. ADVANI: Your House is meeting tomorrow. I will, certainly, ... *{Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANATAN BISI): Please take your seat ...*(Interruptions)* आप उनको बोलने दीजिए। ....(**व्यवधान**).. आप खड़े क्यों हो जाते हैं? ....(**व्यवधान**).. मंत्री जी ने कम्पलीट नहीं किया है। ....(**व्यवधान**)..अहलुवालिया जी आप सुनिये ना। ....(**व्यवधान**).. मंत्री जी, आप एक मिनट बैठेंगे। प्लीज टेक यूअर सीट।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं सदन का समय नहीं लेना चाहता हूं। ....(**व्यवधान**)..

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : आप एक मिनट बैठिये। ....(**व्यवधान**).. मंत्री जी आधा बोलते हैं तो आप लोग उठ कर खड़े हो जाते है। यह क्या बात है? ....(**व्यवधान**)..

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: We want a statement. You should understand the seriousness of the issue. We are asking for a statement and not something else.

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : आप दो आदमी खड़े हो गये हैं। मैं किस को बुलवांऊ? ....(**व्यवधान**)..

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: We want a Statement from the Minister.

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : आप आदमी खड़े हो गए। किसको बुलवाना है ....(**व्यवधान**).. किसको बोलूंगा मैं ....(**व्यवधान**)..

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Mr. Chairman, Sir, he is responding.

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : प्लीज टेक योर सीट ....(**व्यवधान**).. मैं मना नही कर रहा हूं। मेरे बोलने का मतलब हैं ....(**व्यवधान**)..

श्री एस.एस. अहलुवालिया : हमने आपसे स्टेटमेंट मांगा हैं। आप स्टेटमेंट दीजिए। श्रद्धांजलि देने से नहीं होगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : आप बैठिए ना ....(**व्यवधान**).. अब मीणाजी आप क्यों खड़े हो गए। आप बैठिए...

SHRI JIBON ROY (West Bengal): Please allow him to speak. *{Interruptions)*

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : मीणाजी, आप तो थे नहीं हाउस में, एक घंटा बातचीत हो गयी। फिर अब आकर आपने बातचीत चालू कर दी। हाउस में एक परंपरा हैं और एक प्रोसीजर होता है ....(**व्यवधान**).. जस्ट ए मिनट। हाउस का प्रोसीजर होता हैं। कोई मेम्बर आ जाएगा ....(**व्यवधान**).. मीणाजी, प्लीज सुनिए न मेरी बात ....(**व्यवधान**).. आप हाउस मे सीधे आ गए, सीधे खड़े होकर बोल दिए। कुछ प्रोसीजर हैं कि नहीं देयर इज सम प्रोसीजर। मंत्री जी कुछ बोलते हैं और आप खड़े हो जाते हैं इमीडिएटली। मंत्री जी की बात पूरी सुनिए। वे क्या बोलते हैं क्या नहीं। उसके बाद आप जानेंगे। येस, मिस्टर मिनिस्टर।

श्री एस.एस. अहलुवालिया : आप सीधे मत आइए, चक्कर मारकर आइए।

गृह मंत्री (श्री स्राल कृष्ण आडवाणी) : सभापति जी, लोक सभा तो आज एडजर्न हो जाएगी लेकिन राज्य सभा कल भी हैं। मैं कल जितनी जानकारी एकत्र कर सकूंगा, कल आकर यहां पर दूंगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : दैट्स आल। सुनिए, आप लोगों की जितनी एंजाइटी हैं, हर चीज को हम समझते हैं बट एलाउ अस टु रन द हाउस। आप बोलिए। आपके दो और मेम्बर्स हैं बोलने के लिए।

श्री जनेश्वर मिश्र : हम अब जल्दी खत्म कर रहे हैं।

श्री एस.एस. अहलुवालिया : किसको खत्म कर रहे हैं?

श्री जनेश्वर मिश्र : अपनी स्पीच।

मैं बात कर रहा था अंतिम आदमी के बारे में और चर्चा की मऊ जिले के सोहना? स्थिति शहर की दो औरतों के साथ बलात्कार को लेकर जिसकी नोटिस वहां की राज्यसरकार की पुलिस अभी नही ले पा रही हैं। अब बहस यह उठायी जा सकती है कि यह राज्य का विषय हैं। लेकिन समात के दलित वर्ग महिला के साथ भ्रष्टाचार हो या राष्ट्र का विषय हो जाता हैं। जहां कहीं भी अन्याय हो कमजोर के साथ यह राष्ट्र का विषय होगा और इसे मानना चाहिए और सरकार को इसकी जिम्मेवारी लेनी चाहिए तथा राज्य सरकार को इसकी जिम्मेवारी लेनी चाहिए तथा राज्य सरकार को हिदायत देनी चाहिए ।

दूसरी बात मैं कहना चाहता हूं कि एक तरफ तो लिखा हुआ हैं कि बच्चे राष्ट्र की सम्पत्ति हैं उनके विकास का इंतजाम होगा, उनकी पढ़ाई का इंतजाम होगा और कई राज्यों में आजकल इम्तिहान के मैदान में बच्चे गिरफ्तार किए जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश के मैनपुरी/फिरोजाबाद जिले में एक मंत्री का हेलीकाप्टर स्कूल में जहां मैदान के लड़के बैठकर इम्तिहान दे रहे थे, वहीं उत्तर गया। बच्चे गुस्से में आ गए। हेलीकाप्टर पर पत्थर मारने लगे और उसके बाद मंत्री ने पुलिस का एक्शन कराया। बच्चे गिरफ्तार कर लिए गए। एक तरफ उनकी पिटाई की और दूसरी तरफ राष्ट्रपति महोदय अपने अभिभाषण में यहां ऐलान करें। यह सरकार लिखकर उनको दे और वे पढ़े कि बच्चे हिंदुस्तान की तकदीर हैं उनकी तरक्की के लिए, उनकी पढ़ाई के लिए गांरटी की जाएगी और दूसरी तरफ किसी मंत्री की खुशामद के लिए बच्चों की खुलेआम पिटाई हुआ करे। उत्तर प्रदेश में नकल विरोधी अध्यादेश आया हैं, इस पर बहस होनी चाहिए। बहस होनी चाहिए कि बच्चे की नकल क्यों करते हैं, कैसे करते है। मुझे अच्छी तरह से याद हैं मनमोहन सिंह जी, हमारे गांव के एक लड़के ने एक बार नकल की थी। वह पकड़ा गया। हमारे घर के रास्ते से जा रहा था। हमने बुलाया। हमने उससे पूछा, तुम नकल करते हो, पर्ची लेकर जाते हों। गंदी बात हैं। उस लड़के ने क्या जवाब दिया मालूम हैं। देश के प्रधान मंत्री जब पुर्जी लेकर दिल्ली के लाल किले से भाषण देते है तो मैं पुर्जी लेकर इम्तिहान भी नहीं दे सकता? यह उस लड़के के चुटकीलेपन की बात हैं। हिम्मत करके बोला था।

हम लोग जो कुछ भी किया करते हैं, बच्चे हमारी नकल करते हैं। हम पहले यह कालर वाला कुर्त्ता नहीं पहनते थे ।हमारे नेता जय प्रकाश नारायण थे उन्होने कालर वाला कुर्त्ता पहन लिया, हम लोग भी पहनने लगे। देश के जो नेता हैं, मालिक होते हैं, जिस तरह से चलते हैं लोग उनकी नकल करते हैं। इसलिए मैं कहना चाहता हूं उपसभाध्यक्ष जी कि अपराध के बारे में पुलिस के बारे में हमारी दृष्टि साफ होनी चाहिए। हम अपनी गलती से दूसरे का नुकसान करें तब तो अपराध बनता हैं। आपकी जेब काट लें, आपको चांटा मार लें, आपका सिर तोड़ दें लेकिन हमें अपनी गलती से अपना नुकसान करें। पान खातें हों, तंबाकू खाते हों, तब भी अपराध बनेगा। पुलिस हमको गिरफ्तार करेगी। बच्चा नकल करता हैं, वह अपना नुकसान करता हैं या पराए का नुकसान करता हैं इस पर सार्वजानिक बहस होनी चाहिए। वह अपराध की श्रेणी में आता हैं या नहीं इस पर बहस उठाई जानी चाहिए और खुले कर बहस होनी चाहिए । किसी सरकारी पूर्वाग्रह पर यह बात नहीं होनी चाहिए। मैं अर्ज करूंगा कि इस सवाल को उठाना चाहिए।

अंत मे एक सवाल सरहद का हैं। इसमें लिखा है कि पड़ोसी देशों से हमारे रिश्ते सामान्य होंगे। हम आपसी बात-चीत से मामले को हल करेंगे। अभी-अभी 23 तारीख को डा. लोहिया का जन्म दिन मनाया जा रहा था। इस सरकार के एक मंत्री जार्ज फर्नाडिस हमारे मित्र हैं, हमारे सीनियर हैं। हम उनकी इज्जत भी करते हैं और वह जानते हैं कि हम उनकी इज्जत करते हैं और वह भी हमको बहुत दुलार करते हैं। उनका बयान हमने पढ़ लिया। उन्होने भाषण दे दिया कि जो जमीन चीन के कब्जे मे चली गई हैं उसको हम वापस लेंगे। सरकार के लोगों ने भी चिंता जताया कि मिनिस्टर हो करके, रक्षा मंत्री हो करके कैसे यह बयान दिया। तिब्बत का सवाल हमने नहीं छेड़ा हैं, इस सरकार के मंत्री ने छेड़ा हैं। बगल में इसी जंतर-मंतर पर तिब्बत की मुक्ति को ले

करके 6 लोग भूख हड़ताल पर 25 दिन से बैठे हैं। चतुर्वेदी जी यहां हैं, यह भी हमारा समर्थन करेंगे। भूख हड़ताल करते-करते 25 दिन हो गए। हम उम्मीद करते हैं जार्ज फर्नाडिस सत्ता पक्ष में बैठे हुए लोग जो तिब्बत की मुक्ति के बारे में कहते हैं हम यह जानते हैं कि सरकार में रहने के बाद तिब्बत की मुक्ति कमजोर पड़ जाती हैं। विरोध में आने के बाद तिब्बत मुक्ति आंदोलन तेज हो जाता हैं। इतनी ईमानदारी , बेईमानी हम जानते हैं, क्योंकि हम भी सरकार में रहे हैं। तिब्बत के सवाल पर सरकार में रहने पर हम नहीं बोलेंगे, जब हम ...(**व्यवधान**).. जार्ज फर्नाडिस भी यही करते हैं आप लोग भी यही करते थे जब विरोध में थे तिब्बत के सवाल पर बहुत बोलते थे। हिमालय बचाओ सम्मेलन बहुत करते थे। अब आप सत्ता मे आ गए हैं। जब हम थे जब आप हम से सवाल पूछते थे हिमालय बचाओ सम्मेलन का क्या हो रहा हैं, तिब्बत मुक्ति के बारे में क्या कर रहे हो। हम चुप लगा जाते थे। उम्मीद करते हैं आप भी चुप लगाओ। लेकिन हमें खुशी हुई कि आपके बीच का एक मंत्री जो जमीन चीन के कब्जे में गई उसको वापस लाने का संकल्प ले कर निकला। लेकिन मैं जार्ज को जानता हूं। चालाक आदमी हैं। वह बयान बदलने, बयान कतरने, संशोधित करने की कला में कितने माहिर हैं, मै जानता हूं। उसने बाद में कहा कि रक्षा मंत्री का काम हैं। पर सरहद पर अगर किसी मुल्क से किसी मुद्दे पर विवाद हो तो वह आपस में बात करें और तय करें। चालाकी से बात से हट गये। लेकिन मैं चहूंगा कि सरकार इस तरह के मुद्दों पर कोई स्पष्टीकरण दे और यह लोग जिसमें एक की उम्र 72 साल हैं, एक की उम्र 60 साल है, भूख हड़ताल पर बैठे हैं। उन भूख हड़तालियों के बारे में गृह मंत्री जी को या इस सरकार को, मैं विदेश मंत्री से उम्मीद नहीं करता, सरकार से उम्मीद नहीं करता कि तिब्बत के सवाल पर चार दिन कुर्सी पर बैठते ही आप हल ढूंढ लें। लेकिन अगर हिन्दुस्तान में किसी मुद्दे पर बैठा हुआ भूख हड़ताली मर जाता हैं तो वह सरकार की जिम्मेवारी बनती हैं। इसलिए उसके बारे में वह क्या कदम उठायेंगे, सरकार की तरफ से कोई उनको देखने जा रहा हैं या नहीं, ये बातें भी होनी चाहिएं और हम उम्मीद करते हैं कि इस समय जो लोग कुर्सी पर बैठे हैं वे उन भूख हड़तालियों को देखेंगे उनके बारे में एक नज़रिया रखेंगे। हम जानते हैं कि कोई जूरिस्ट एसोसिएशन ने मानवाधिकार के मुद्दे को तिब्बत में बहुत जोर देकर के उछाल दिया। सरकार में यह हिम्मत नहीं हैं कि मानवाधिकार के उस मुद्दे को अपना मुद्दा बना करके तिब्बत के मुद्दे को उठाए और उसकी आज़ादी की बात करें। लेकिन पड़ोस में अगर कमजोर देश कोई पड़ा

है अगर कराह रहा हैं और आप गद्दी पर बैठने के बाद अब तक जितने लोग गद्दी पर बैठने के बाद अब तक जितने लोग गद्दी पर बैठे अपने को सब से मजबूत मानते हो तो किसी पड़ोसी के कराह को सहलाने का काम आपको करना चाहिए। यह मैं आपसे उम्मीद करता हूं। मैं बहुत बात बोल गया, मैं केवल एक बात कहूंगा .....(**व्यवधान**)...।

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : आपका समय खत्म हो गया।

श्री जनेश्वर मिश्र : सिर्फ एक बात, इसमें लिखा हैं कि सरकार संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल सभी भाषाओं को सरकारी भाषाओं के रूप में मानने की व्यवहारिकता के बारे में अध्ययन करने के लिए एक समिति बनाएगी। केवल इस मुद्दे पर मुझे बोलना हैं कि भारतीय भाषाओं को व्यवहार की भाषा बनाने के लिए समिति बनाई जाएगी और जो दस्तावेज राष्ट्रपति महोदय को पढ़ने के लिए दिया जाएगा, वह अंग्रेजी में दिया जाएगा। मैं नहीं जानता कि अंग्रेजी भारतीय भाषाओं में आ गयी हैं या नहीं? एक माननीय सदस्य कह रहे हैं कि राष्ट्रपति जी हिंदी नहीं जानते राष्ट्रपति जी की कोई मातृभाषा होगी। इन 18 भाषाओं में से कोई-न-कोई मातृभाषा होगी राष्ट्रपति महोदय अपनी भाषा में अगर हम लोगों को सम्बोधित करते और उस का अनुवाद उपराष्ट्रपति जी ने सुना दिया होता तो जैसा कि मैंने शुरू में कहा इस भाषा में बहुत बड़ी उदासी छाई हुई हैं, राष्ट्र के जीवन से वह उदासी का पक्ष गायब हो जाता क्योकि हमारी जुबान मजबूत हो जाती। महोदय, मैं जानता हूं कि भाषा के सवाल पर कौन सी मजबूरियां हैं? वर्तमान सरकार द्वारा इन 18 भाषाओं को सरकारी मान्यता दिलाने के लिए एक समिति बानने की बात की जा रही हैं। मैं उन मजबूरियों की चर्चा नहीं करना चाहता क्योकि जो गठजोड़ की सरकारें होती हैं वह कई प्रकार की मजबूरियों का शिकार हो जाती हैं। मैं उन की चर्चा नहीं करूंगा लेकिन इतना कहूंगा कि अगर यह सरकार 18 भाषाओं को सरकारी भाषा के रूप में गाठित करने की बात कहती हैं तो उस के पहले कृपया हिम्मत कर के

SHRI VAYALAR RAVI: Sir, this language controversy is not good. Any attempt to impose Hindi will be very dangerous. ...*(Interruptions)...* We cannot accept any argument in this House. Sir, our Constitution provides for English as a link language. How can he deny it? How can he abuse the office of President? I take strong objection to this kind of a

message which is being spread in this House. ...*(Interruptions)*...

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : अरे आप बैठिए न, बैठिए ना। प्लीज टेक योर सीट। एक मिनट ठहरिए। .....(**व्यवधान**)... बैठिए न, बैठिए।

श्री जनेश्वर मिश्र : उपसभाध्यक्ष जी, एक मिनिट में सफाई दूंगा। मै अपनी बात खत्म करने जा रहा हूं

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : अब आप कनक्लूड कीजिए, खत्म कीजिए। .....(**व्यवधान**)... बैठिए न। .....(**व्यवधान**)...

श्री जनेश्वर मिश्र : महोदय, आजादी की लड़ाई के दौरान .....(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : बैठिए-बैठिए न। .....(**व्यवधान**)...

SHRI VAYALAR RAVI: Sir, I want to know whether I can speak in English. I am not going to speak in Malayalam because nobody understands Malayalam. ...*(Interruptions)*... How can I speak in Malayalam when it is not understood by the Members? ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANATAN BISI): Please take your seat. ...*(Interruptions)*... Please take your scat. ...*(Interruptions)*...

SHRI VAYALAR RAVI: Sir, this Government has created a problem. How can the Members speak in 18 languages in this House. What are they going to achieve by this? ...*(Interruptions)*... Sir, any attack on a link language is not correct.

SHRI N. THALAVAI SUNDARAM (Tamil Nadu): Let him withdraw his words. ...*(Interruptions)*...

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : आप बैठिए, मैं बोल रहा हूं। बैठिए, आप। प्लीज टेक योर सीट। बैठिए न, मैं बोल रहा हूं। आप बैठिए न। प्लीज टेक योर सीट। अरे आप बैठिए न।

SHRI AMAR SINGH (Uttar Pradesh): They cannot misbehave like this.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANATAN BISI): Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please sit down. Please don't have any cross-talk.

अरे बैठिए न, मैं बोल रहा हू। मैं बोलूंगा, बैठिए। आप लोग बैठिए। .....(**व्यवधान**)... बैठिए न, मैडम।

श्री एस.एस. अहलुवालिया : उपसभाध्यक्ष महोदय, हिंदी भाषा का अपमान सहन नहीं होगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : आप बैठिए न, अहलुवालिया जी। बैठिए न .....(**व्यवधान**)... अहलुवालिया जी बैठिए न। आप बैठिए न। .....(**व्यवधान**)... अरे मैं बोल रहा हूं बैठिए न। मैं बोल रहा हूं आप बैठिए। प्लीज टेक योर सीट, प्लीज टेक योर सीट। Please take your scat. ...*(Interruptions)*... Please allow me to function... .*(Interruptions)*...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : 18 भाषा हों या 26 भाषा हों, जब इस देश में प्रमाणित हो जाएंगी, जुबानी बोली जाएंगी जो उतने ही इंटरप्रेटर यहां दे दिए जाएंगे ताकि हर आदमी अपनी भाषा में बोलेंगे। .....(**व्यवधान**)... भाषा के नाम पर ऐसा नहीं होना चाहिए। .....(**व्यवधान**)...

SHRI VAYALAR RAVI: I do not agree with him. ...*(Interruptions)*...

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : आप बैठिए। .....(**व्यवधान**)... आप क्यों खड़े हो गए? .....(**व्यवधान**)... आप बैठिए। .....(**व्यवधान**)... मैं बोल रहा हू। आप बैठिए। .....(**व्यवधान**)... आप बैठिए .....(**व्यवधान**)... प्लीज टेक योर सीट। बैठिए, मैं बोल रहा हूं। .....(**व्यवधान**)... प्लीज, आप बैठिए। .....(**व्यवधान**)... एक मिनट आप बैठिए। आप बैठिए। .....(**व्यवधान**)... आप बैठिए। आप खड़े क्यों हो रहे है? .....(**व्यवधान**)... आप बैठिए,न। बोल रहा हूं मैं। .....(**व्यवधान**)... अरे, बैठिए। प्लीज , बैठिए। मैं बोल रहा हूं। .....(**व्यवधान**)... आप बैठिए, न। .....(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : राष्ट्रभाषा हिन्दी के विरोधी, यह इनको समर्थन दे रहे हैं। .....(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : मैं खड़ा हूं, आप बैठिए। .....(**व्यवधान**)...

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: This is blackmailing and intimidation by the Hindi—speaking people.

उपसभाध्यक्ष (श्री सनातन बिसि) : मैडम, प्लीज बैठिए।.....(**व्यवधान**)... अहलुवालिया जी, मैं खड़ा हूं,

आप बैठिए। .....(**व्यवधान**)... मैडम, आप बैठिए। .....(**व्यवधान**)...

(The Deputy Chairman in the Chair)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Will you please sit down? ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... Everybody should sit down. ...*(Interruptions)*... Jayanthiji, please sit down. ... *(Interruptions)*...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : हिन्दी राष्ट्रभाषा के विरोधी यह समर्थन कर रहे हैं इस सरकार का। .....(**व्यवधान**)...

उपसभापति : अहलुवालिया जी, आप बैठिए। .....(**व्यवधान**)... बैठिए। .....(**व्यवधान**)... बैठिए। अहलुवालिया जी, बैठिए।

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: In protest against the intimidation by the Hindi-speaking people and suppression of Tamil language, we arc staging a walk-out.

(At this stage some hon. Members left the Chamber)

श्री एस.एस. अहलुवालिया : वे लोग राष्ट्रभाषा हिन्दी का विरोध करते हैं .....(**व्यवधान**)...

उपसभापति : बैठ जाइए। .....(**व्यवधान**)... आप बैठ जाइए। बैठ जाइए। .....(**व्यवधान**)... जस्ट वन मिनट। एक बात मैं आपसे अर्ज करूं, मिश्र जी, कि आपकी पार्टी का 26 मिनट का समय था और आप दो बजे से बोल रहे हैं। .....(**व्यवधान**)... ठीक हैं, सवा दो बजे से बोल रहे हैं।

श्री जनेश्वर मिश्र : मैडम, सवा दो बजे से भी नहीं। दस मिनट तो बोला हूं मैं। .....(**व्यवधान**)...

श्री अमर सिंह : मैडम, हिन्दी का सवाल था। .....(**व्यवधान**)...

उपसभापति : सवाल हिन्दी का हो जाएगा। मैं भी हिन्दी बोलती हूं। मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, मैं सब बोलती हूं हिन्दी। .....(**व्यवधान**)... अभी आप बैठिए। यहां संवा दो बजे का टाइम लिखा हैं। अभी आपके श्री ईश दत्त यादव और मोहम्मद आज़म साहब का भी नाम लिखा हैं। अगर इतना समय आप लें लेंगे तो जितने लोग हाऊस में बोलने के लिए बैठे है, वह कैसे बोलेंगे?

श्री जनेश्वर मिश्र : बीच में दूसरा मामला आ गया।

उपसभापति : नहीं, दूसरा मामला नहीं होता।

श्री जनेश्वर मिश्र : एक बात कह दें हम, मैंडम। मैं केवल कहना चाहता हूं .....(**व्यवधान**)... देखिए, अब यह खड़े हो गए। हमारा टाइम ऐसे ही जाता हैं। मैडम, जब हम बोल रहे थे तब भी अहलुवालिया साहब ने त्रिपुरा का एक सवाल उठा दिया और उस पर पूरा सदन बहस करने लगा। वह बहस 45 से मिनट से ज्यादा चली। अब उस समय को हमारे समय में क्यों जोड़ा जा रहा हैं? समझ में नहीं आता। महोदया, मुझे बोलने दीजिए, मैं एक मिनट में खत्म कर रहा हूं।

उपसभापति : आप खत्म कर दीजिए, कहि की इजाजम दूं? इतना झगड़ा आपने कराया, अब बंद कर दीजिए ....(**व्यवधान**)....

SHRI VAYALAR RAVI: My question for clarification is very simple. I have great respect for Hindi as *Rashtra Bhasha* and I wanted this to continue. But, I only object to the denunciation of a link language—English—which is used in the South. So, Please do not make a language controversy in this House. It will go against the national interest. This is what I wanted to say.

श्रीमती जयन्ती नटराजन : सारी राजभाषाएं हैं ...(**व्यवधान**)....

उपसभापति : अभी आप चुप रहिए, खामोश हो जाइए ...(**व्यवधान**).... रामदेव भंडारी जी, आप बोलेंगे नहीं बिल्कुल ...(**व्यवधान**).... देखिए, देश में बहुत बंटवारे हो चुके हैं, कृपया जुबान के नाम पर हाऊस में बंटवारा न करिए। जिसको जो लैम्वेज आती हैं, उसमे बोले। सभी भाषाए अच्छी हैं। इतनी सी बात पर झगड़ा मत करिए। हमारे राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर जो धन्यवाद प्रस्ताव हैं, उसी पर आप बोलिए। ये सब झगड़े यहां करने से क्या फायदा? बाहर भी झगडा, यह भी झगड़ा। मिश्र् जी, अब आप बैठ जाइए।

श्री जनेश्वर मिश्र : मैडम, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण का जो यह प्वांइट 26 हैं, उसमें लिखा हैं कि सरकार संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल सभी 18 भाषाओं को सरकारी भाषाओं के रूप में मानने की व्यवहारिकता के बारे में अध्ययन करने के लिए एक कमेटी बनाएगी। हमने यह कहा कि अगर सरकार उसमें वह जोड़ देती कि अंग्रेजी भाषा की सरकारी मान्यता समाप्त हो जाती हैं तो हिन्दुस्तान के करोड़ो लोगों का दिल खिल जाता। हमने किसी पर हिंदी थोपने को नहीं कहा। आप हम पर तमिल थोप दीजिए, उर्दू थोप

दीजिए, बंगला थोप दीजिए, उसें हम स्वीकार कर लेंगे ...(**व्यवधान**)....

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let him speak. Let him express his view point. Why should you object? .... *(Interruptions)...*

श्री जनेश्वर मिश्र : हमारे यह कहने पर इतनी जोर से शोर क्यों किया गया, यह हम समझ नहीं सके ...(**व्यवधान**)....

उपसभापति : बहुत हो गया शोर, आपको मालूम हैं आप 34 मिनट बोल चुके हैं और 43 मिनट आपकी वजह से समय गया ...(**व्यवधान**)....

श्री जनेश्वर मिश्र : अगर माननीय सदस्यों की भावनाओं को गलतफहमी में, अनजाने में चोट पहुंची हैं। वे अपनी भाषा में राज चलाना चाहते हैं देश का, इसे हम स्वीकार कर लेंगे लेकिन किसी विदेशी भाषा को हम स्वीकार नहीं करेंगे, यह हम बार-बार कहते हैं। धन्यवाद।

श्रीमती मालती शर्मा (उत्तर प्रदेश) : महोदया, मैं आपको धन्यवाद देती हूं कि आपने मुझे राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर रखे गए धन्यवाद प्रस्ताव पर बोलने का मौका दिया। मैं इस धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करती हूं। महोदया, राष्ट्रपति का अभिभाषण किसी भी सरकार का एक दस्तावेज होता हैं और इससे यह जानकारी मिलती है कि सरकार की नीयत क्या हैं और वह देश की जनता के लिए हृदय मे किन पीड़ाओं को संजोकर उनको कष्टों को दूर करना चाहती हैं।

महोदय, सबसे अच्छी बात जो राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में कहीं गई हैं, वह यह हैं कि सरकार तालमेल से काम करेगी, मेल-मिलाप से काम करेगी। मैं यह समझती हूं कि आज की परिस्थिति में इन बातों की आवश्यकता हैं जो राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में कहीं गई है। महोदया, डेढ़ वर्ष के बाद ही देश की जनता को चुनाव में धकेल दिया गया। जनता ने तो उस समय भी भारतीय जनता पार्टी को वोट देकर सबसे बड़े दल के रूप में भेजा था और सरकार भी बनी थी किन्तु कांग्रेस के भाइयों को यह बरदाश्त नहीं हो सका और हुआ यह कि सरकार तोड़ दी गई और लोगों को कहा गया कि आप आईए, हम आपको प्रधानमंत्री बनाएंगे। प्रधानमंत्री बनाकर भी लाए माननीय देवगौड़ा जी को लेकिन क्यों नहीं चलाई वह सरकार ....(**व्यवधान**)...

चलिए उन मुस्लिम बस्तियों में। 50 साल के आपके शासन ने क्या दिया हैं मुस्लिम भाईयों को? वह टाट के पर्दे हटाइए और देखिए उनकी दशा क्या हैं। आप करके गए हैं, कोई और करके नहीं गया है। लेकिन एक अच्छी सरकार जो अच्छी नीयत लेकर आई हैं, करना चाहती हैं। पहले ढाई साल आपकी जनता पार्टी की सरकार चली थी केन्द्र में। विदेश मंत्री बने थे अटल बिहारी वाजपेयी और विदेश मंत्री के नाते मैं आपको बता देना चाहती हूं कि उन्होने क्या-क्या काम किए थे, आप सब लोग जानते हैं। उस समय भी आप लोगों ने मध्यावधि चुनाव करवा दिये थे और मध्यावधि चुनाव होने के नाते लखीमपुर खीरों में मेरी ड्यूटी लगी थी। मैं वहां गई थी अपनी पार्टी का चुनाव प्रचार करने के लिए। मैं मुस्लिम बस्तियों में प्रचार कर रही थी और मुस्लिम भाईयों के बीच में जाकर के मैं वोट मांग रही थी। उन्होने मुझसे पूछा कि आप किस पार्टी से बिलांग करती हैं? मैंने कहा कि मै तो अटल बिहारी वाजपेयी की पार्टी से हूं। उन्होने कहा कि वह बहुत अच्छा इंसान हैं, हम उसकी पार्टी को वोट जरूर देंगे। मैंने कहा कि—क्यों? उसने हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के वह रास्ते खोलें। मां को बेटा मिला, बहन को भाई मिला, आपस में एक दूसरे की शक्लें देखी हैं सगे सम्बन्धियों ने आपने तो 50 साल में ताले लगाकर रखे थे।

आप मुस्लिमों के* बनते हैं। अरे, पांच साल का* हमें दे दो, अगर तुम्हारी तरफ मुंह फेरकर भी देख लें मुस्लिम तो कहना। ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : जनता* देती हैं।

श्रीमती मालती शर्मा : आप* छोड़ दीजिए। मुसलमान समझ चुका हैं कि अब आपकी*बंद होगी। ...(**व्यवधान**)...

श्री एस. एस. अहलुवालिया : मैडम, सरकार चलाने का कोई* होता हैं? ...(**व्यवधान**)... यह एकसपंज किया जाए। ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती मालती शर्मा : महोदया, मैं कहना चाहती हूं कि अगर अहलुवालिया जी को यह अधिकार होगा कि हरेक के बीच में उठ कर बोलें तो हम भी अहलुवालिया जी को बोलने नहीं देंगे। यह कोई तरीका नहीं हैं। अहलुवालिया जी क्यों खड़े हो जाते हैं हरेक के बीच में? ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : जनता ने * दिया हैं? यह अनपार्लियामेंटरी हैं।

---

*Expunged as ordered by the Chair.

THE DEPUTY CHAIRMAN: It is not unparliamentary. Please sit down. *(Interrputions)*

-SHRI MD. SALIM: Madam, she is giving wrong information to the House. I wanted to draw your attention

श्रीमती मालती शर्मा : फिर लेकर आए आप गुजराल जी को। उनकी सरकार भी आप नहीं निभा पाए ...(**व्यवधान**)... मैं अपने विचार रख रही हूं सलीम साहब, आप इसमें इंटरफीयर नहीं कर सकते।

श्री मोहम्मद सलीम : महोदया, बाहर जितना भी गलत-सलत बोला जाए लेकिन हाऊस में तो सही बोला जाना चाहिए ...(**व्यवधान**)... वे कह रही हैं कि पिछली बार भारतीय जनता पार्टी की सरकार को तोड़ा, किसने तोड़ा? ...(**व्यवधान**)...

جتنا باہر : ہیمہود **:سلیم محمد یشر†**
میں هاؤس لیکن جائے بولا سلط غلط یبہ
وہ..."داخلتم"... چاہئے جانا بولا صحیح تو
بھارتیہ بار یپچھل کہ ہیں یرہ کہہ
کس ۔ توڑا کو سرکار یک یپارٹ جنتا
نے توڑا..."مداخلت"...

श्रीमती मालती शर्मा : गुजराल जी का साथ भी आप नही निभा सके। उस सरकार को भी आपने गिरा दिया ...(**व्यवधान**)...

मैं जनता को यह बात स्पष्ट कर देना चाहती हूं कि आपकी भूख थी, कांग्रेस की भूख थी कि मैं प्रधान मंत्री बनूंगा, मैं प्रधान मंत्री बनूंगा और उसके कारण से आप ने देश की जनता को डेढ़ साल के बाद ही चुनाव की आग में झोंक दिया। ...(**व्यवधान**)... चुनाव हुए और चुनाव होने के बाद फिर जनता ने हमें चुनकर के भेजा हैं। अगर भारतीय जनता पार्टी के लोगों ने ...(**व्यवधान**)...

उपसभापति : मालती जी, आपने क्या ऐसी बात कह दी जो यह खफा हो गए?

श्रीमती मालती शर्मा : कोई बात मैने ऐसी नहीं कहीं। महोदया, मैं अभी माननीय मिश्र जी का भाषण सुन रही थी। मैं यह कहना चाहूंगी कि 50 साल में जो यह कहर डा गए हैं आज दस दिन में यह चाहते हैं कि

†[ ]Transliteration in Arabic Script

पुडिया खोल दें और उन्हे विषयों को लेकर यह किस तरह हमारे ऊपर थोप रहे हैं। हमें यह कहने भी नहीं देना चाहते। मैं उन बातो को दोहराना चाहती हू। यह सब कुछ किसने किया? ...(**व्यवधान**)... आज फिर अगर देश की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को एक बड़े दल के रूप में भेजा हैं और भारतीय जनता पार्टी ने इस चीज की आवश्यकता महसूस की कि क्षेत्रीय पार्टियां जो क्षेत्रों के कष्टों को समझती हैं उन कष्ट को समझते हुए भारतीय जनता पार्टी के साथ में मिलकर अगर उन्होने सरकार बनाई हैं तो महोदया, मैं कहना चाहती हूं कि क्या बुराई की बात हैं इसमें? आप परेशान हैं, आपसे बर्दास्त नहीं हो रहा हैं।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी : अपने समय के दुरूस्त कर दें, अभी क्यों परेशान हैं।

उपसभापति : सुबह से यही हो रहा है, लोग बीच-बीच में ठीक करने की कोशिश कर रहे हैं। अगर ऐसे होगा तो कैसे चलेगा। मालती जी, क्या टोंट किया?

श्रीमती मालती शर्मा : महोदया, मैंने कोई टोंट नहीं किया। महोदय, यह राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर नहीं बोलने देना चाहते और यह चाहते हैं कि जैसा यह चाहें वैसा ही तोड़ मरोड़कर देश की जनता के सामने अपनी तस्वीर रखते रहे। अभी मेरे बड़े भाई माननीय मिश्र जी बोल कर के चुके हैं और उन्होने बहुत सारी बातें रखी हैं कि बीस करोड़ की आबादी वाला मुसलमान आज भयभीत हैं। वह घरों मे हैं। महोदया, मैं बता देना चाहती हूं कि पहले भी भारतीय जनता पार्टी की सरकार 18 महीने प्रान्त में राज कर चुकी हैं और कहीं भी एक जगह हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा हुआ हो, कोई घटना हुई तो आप मुझे बतलाइए। मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि मुजफ्फरनगर के रामपुर तिराहा कांड के समय आप इसी सदन में थे और किस तरह से वहां दुर्गाती हुई थी महिलाओं की और उसी समय थोड़े दिन के बाद ही वहां अलीगढ़ में एक भट्टे की लेबर की तरह 16 वर्ष की मुस्लिम लड़की के साथ बलात्कार किया गया था। मेरे मुस्लिम भाई अगर मंदिर-मस्जिद का मसला हो तो गला फाड़कर चिल्लाते हैं लेकिन उस मुस्लिम लड़की के साथ जिस प्रकार का व्यवहार हुआ था, न उस पर माननीय मिश्र जी बोले थे, न मेरे मुस्लिम भाई बोले थे, क्योंकि उस समय मुलायम सिंह जी का शासन उत्तर प्रदेश में था। मैं कहना चाहती हूं आपसे कि महिलाओं की दशा आपके शासनकाल में क्या हुई हैं? यह महिलाओं को जगह-जगह बेचने के अड्डे किसके राज में बने हैं, यह महिलाओं की दुर्दशा किसके राज में हुई है? 50 साल तो सरकार चलाकर आप गए हैं। मैं

कहना नहीं चाहती थी लेकिन मुझे दुख हैं कि राष्ट्रपति जी के अभिभाषण की बातें कहां घसीटी जाती हैं।

उपसभापति : आप शांति से सुनिए।

श्रीमती मालमी शर्मा : आप कहते है कि मुस्लिम भाई आज भव में हैं। मैं चलना चाहती हूं आपके साथ,

श्रीमती मालती शर्मा : क्या हरेक का* अहलुवालिया जी ने लिया हैं? क्यों खड़े होकर हरेक को इंटरफेयर करते हैं? कौन सा तरीका हैं यह? ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : क्या सरकारी आक्शन होता हैं? ...(**व्यवधान**)...

श्री महेश्वर सिंह : पूरे राज्य सभा में बोलने का* अहलुवालिया जी को है? ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : अरे भारतीय संस्कृति की बात करते हो तो जरा भाषा तो शुद्व बोलो।

उपसभापति : अच्छा अब वे बोल रही हैं, उनकी भाषा को छोड़िए।

श्रीमती मालती शर्मा : भाषा तो बिगाड़ गए, सारे देश की भाषा तुम बिगाड़ गए और अब हमें भाषा सिखाने आए हैं और सबको भाषा सिखा रहे है? इसीलिए कि हम देश की हरेक भाषा का सम्मान कर रहे हैं? इस पर आपके पेट में दर्द हो रहा हैं तो उसका इलाज क्या हैं हमारे पास?

महोदया, मैं कहना चाहती हूं कि राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में भय, भूख, भ्रष्टाचार, देश की जनता को इन सारी चीजों से मुक्त कराने का जो वचन दिया हैं, निरक्षता मिटाने का जो वचन दिया है, लोगों को रोजगार देने का वचन दिया हैं, मैं समझती हू कि हमें प्रसन्न होना चाहिए और उसका स्वागत करना चाहिए न कि उसके लिए खड़े होकर उसमें भी कीड़े निकालने चाहिए, यह बड़े दुर्भाग्य की बात है।

महोदया, एक बात और मेरी समझ में नहीं आती कि जो उठता हैं, वहीं अपने को दूध का धुला कहता हैं, जो कहता हैं वही कहता है हम मुस्लिमों के* हैं, हम फलाने के* हैं। यह * कब तक लेकर चलाएंगे? ...(**व्यवधान**)... मै इनसे पूछना चाहती हूं। तुम जो कम्युनल हो, हम सेक्युलर हैं। तुम जो धर्म नहीं जानते .... महोदया , मैं एक बात कह देना चाहती हूं। हम धार्मिक हैं, अपने धर्म का पालन करते हैं और दूसरे के धर्म में इज्जत करना चाहते हैं, उसका आदर करना चाहते हैं। महोदया, हम खुन-खराबे में विश्वास नहीं रखते। हम जो जगत्गुरू शंकराचार्य जिन्होने तीस साल में विचारो की क्रान्ति ला करके देश के अंदर पूरी वैचारिक क्रान्ति खड़ी कर दी थी, हम उनके पुजारी हैं। हम खुन-खराबे के पुजारी नहीं हैं। महोदया, मैं कह देना चाहती हूं विपक्षी भाइयों से कि अरे बहुत दिनों तक बेवकूफ बनाया ...(**व्यवधान**)... बहुत दिनों तक बेवकूफ बनाया ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : कुंभ के मेले में क्या हुआ? ...(**व्यवधान**)... कुंभ के मेले में क्या हुआ? वहां के प्रशासन ने क्या किया? ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती मालती शर्मा : आपकी भाषा मेरी समझ में नहीं आती। ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : कुंभ के मेले में किस तरह से लूट-खसोट हुई? ...(**व्यवधान**)... और ये मूक दर्शक बन कर बैठे रहे? ...(**व्यवधान**)...

उपसभापति : अहलुवालिया जी, बैठिए ना। ...(**व्यवधान**)...

एक माननीय सदस्य : मैंडम, मिस्टर अहलुवालिया हर बार खड़े हो जाते हैं। ...(**व्यवधान**)... यह बरदाश्त करने वाली बात नहीं हैं । ये हर मिनट में खड़े हो जाते हैं। ...(**व्यवधान**)...

उपसभापति : अब तो बैठ गए ना।

श्रीमती मालती शर्मा : महोदया, मैं एक ही बात का आश्वासन देना चाहती हूं। आपको भुगता पचास साल, हमें केवल पांच साल चलने दो फिर पूछेंगे तुमसे कि लाओ वे शब्द निकाल कर, कौन से शब्द लाना चाहते हो जिसके पीछे देश की जनता को बेवकूफ बना कर बार-बार तुम कुर्सी पर बैठते रहे? धर्म के नाम पर मेरे कम्युनिस्ट पार्टी के भाइयों के पेट में भी दर्द उठता हैं। मैं कहना चाहती कि ये अंदर से कुछ और बाहर से कुछ और हैं।

महोदया, मैं राजनीति-शास्त्र की विघार्थी रही हूं और मेरे जो प्रोफेसर थे, वे इज्म पढ़ावा करते थे और वे कम्युनिज्म की विचारधारा के थे। मैं बहुत से कम्युनिस्ट परिवारों में गई हूं। महोदया, मैं कहना चाहती हूं कि जब घर में इनके बच्चे का थोड़ा सा कान गर्म होता हैं तो इनकी बीवी तुरतं मंदिर में दीया जलाने जाती है, पीपल के पेड़ को पूजती हैं और ये बाहर कहते हैं कि भगवान क्या होता हैं? अल्लाह क्या होता हैं? कुछ नहीं होता। ये कहते कुछ और हैं, अंदर से मानते हैं राम को, उसी भगवान को लेकिन बाहर से दिखाया करते हैं।...(**व्यवधान**)...

उपसभापति : अच्छा, आप कमेन्ट्री क्यों कर रहे हैं मूलचन्द जी? ...(**व्यवधान**)...

श्री मोहम्मद सलीम : महोदया, मैं कह रहा हूं कि हम राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद कर रहे हैं लेकिन ऐसे धन्यवाद से तो राष्ट्रपति महोदय भी परेशान हो जाएंगे।

†شری محمد سلیم: مہودیہ میں کہہ رہا ہوں کہ ہم راشٹرپتی کے ابھیبھاشن پر دھنیواد کر رہے ہیں لیکن ایسے دھنیواد سے تو راشٹرپتی مہودے بھی پریشان ہو جائینگے۔

श्रीमती मालती शर्मा : आप भी बहुत सारे विषय लाते हैं, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में आप भी बहुत सारे विषय लाते है। ...(**व्यवधान**)...

उपसभापति : बैठिए .... बैठिए। ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती मालती शर्मा : मैडम, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में जो ...(**व्यवधान**)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. I will not permit this kind of interruptions. Please keep quiet. Enough is enough., Let her speak. You should has some courtesy to the lady who is speaking. That is her view point, let her say whatever she likes ...*(Interrputions)* No, please. It does not matter, let her say whatever she wants to say. *(Interruptions)* What has happened to you, Mr. Salim? Would you please sit down? *(Interruptions)*

श्रीमती मालती शर्मा: महोदया, मैं धन्यवाद देती हूं। राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में वितरण प्रणाली का जिक्र किया हैं। घरेलू उत्पाद की चर्चा की है जिसकी ओर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक हैं। बेहतर वितरण प्रणाली की चर्चा की गयी हैं। मेरे भाई पूछना चाहते हैं कि कैसे कर देंगे? अरे, आप नहीं कर सके तो औरों को तो करने दो। जब करेंगे, करके दिखा देंगे, तब पूछ लेना कि कैसे कर दिया महोदया, सरकार ने जनसंख्या पर चिन्ता जताई हैं। महोदया, मैं पूछना चाहती हूं िक पढ़ा लिखा व्यक्ति परिवार को समिति क्यों रखता हैं और अशिक्षित व्यक्ति के 12 बच्चे क्यों होते हैं? महोदया, हमारे माननीय नेता सदन में यहा मौजूद नहीं हैं। मैं उनका नाम लूं कि न लूं, इसके लिए मैं असमंजस में हूं। मैं पूछना चाहती हूं कि उनके दो बच्चे क्यों हैं? महोदया, मैं तो आपसे भी पूछना चाहती हूं कि आपकी तो तीन बेटियां हैं, आपने उन्हे बहुत अच्छा पढ़ाया-लिखाया, आपके मन में तो कभी नहीं आता कि मेरे बेटा हैं या नहीं। अगर शिक्षा के माध्यम से हमारी सरकार लोगों में यह जागृति लाना चाहती हैं तो लोगों के क्यों पेट में दर्द होता हैं? हमारी सरकार जनसंख्या वृद्घि को रोकना चाहती हैं? हमारी सरकार जनसंख्या वृद्घि को रोकना चाहती हैं, शिक्षा में परिवर्तन लाना चाहती हैं। ...(**व्यवधान**).. महोदया, बहुत दिनों तक चिल्लाहट सुनी। आप भी उन मीटिंगों में जाकर बैठती रही। कमेटिंया बनायी गयीं, चेयरमैन बनाए गए , लोगों के साक्ष्य के लिए गये कि हम लोग महिलाओं की दशा सुधारेंगे, 33 परसेंट देंगे पर रद्दी की टोकरी में उस बिल को वह फैककर चले गये। ...(**व्यवधान**).. उन्होने क्या कर दिया इतने दिनों तक ड्रामा करके? ...(**व्यवधान**).. आपने बहुत दिनो तक हमारी ...(**व्यवधान**).. लेकिन आज सरकार ...(**व्यवधान**)..

THE DEPUTY CHAIRMAN: No, no. I will correct the thing, please. Just let me correct it. ..*(Interruptions)* Just one minute. बिल के बारे में तो प्लीज किसी पर इल्जाम मत लगाइए। All of us are responsible for it. तो महिला को अगर इससे बाहर रखें तो बड़ी मेहरबानी होगी क्योंकि महिला के नाम पर सब पालिटिकल पार्टीज ने अपने-अपने घोषणा पत्र में कहा मगर किसी ने महिला को ज्यादा टिकिट भी नहीं दिये। महिला की सिर्फ बात करके हमारे कंधों पर बंदूक लगाकर सब चलते हैं और दूसरों का िशकार करते हैं इसलिए आप बैठ जाइए। इस बारे में कोई बात मत करिए। ...(**व्यवधान**)..

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी : करवाकर रहेंगी, यह कह रही हैं। ...(**व्यवधान**)..

श्रीमती मालती शर्मा : महोदया, मैं कहना चाहती हूं कि 33 परसेंट का आरक्षण देने के लिए राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में चर्चा हुई है। तो आज जब उसके ...(**व्यवधान**). महोदया, इसी प्रकार से राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में बच्चियों के लिए निःशुल्क शिक्षा कहीं गयी हैं। मैं समझती हूं कि यह आदर के योग्य बात हैं। महिलाओं के विषय में अहलुवालिया जी या अन्य भाइयों को पिछली सरकार के बारे में मै यह कह देना चाहती हूं कि जो कुछ इस देश का वातावरण बना हैं, उसको कुरेदिए मत। मैं महिला मोर्चा की अध्यक्ष रही हूं और मैंने मुलायम सिंह जी का शासन काल देखा हैं। उत्तर

प्रदेश में गर्भवती महिलाओं के साथ जो जो जुर्म हुए हैं—कहिए तो मैं आंकड़े मंगाकर दे दूं अगर आंकड़े में ही आप जाना चाहते है तो आंकड़े मंगाकर पेश कर सकती हूं। ...(**व्यवधान**)..

श्री जलालुदीन अंसारी (बिहार) : राजस्थान में क्या-क्या हुआ होटल में? ...(**व्यवधान**)..

श्रीमती मालती शर्मा : वहां क्या –क्या दुदर्शा हुई हैं, मैं बता देना चाहती हूं। ...(**व्यवधान**)..

श्री जलालुदीन अंसारी : राजस्थान में लड़कियों के साथ क्या हुआ, उसके बारे में बताइए। ...(**व्यवधान**)..

†شری جلال الدین انصاری: راجستھان میں لڑکیوں کے ساتھ کیا ہوا اسکے بارے میں بتائیے... "مداخلت"...

श्रीमती मालती शर्मा : महिलाओ को बेचने के अड्डे बने। वह किसके शासनकाल में बने? आपके शासनकाल में बने। ...(**व्यवधान**)..

श्री एस.एस. अहलुवालिया : महोदया, राजस्थान के होस्टल में क्या हुआ? ...(**व्यवधान**).. राजस्थान यूनीवर्सिटी के होस्टल में क्या हुआ? ...(**व्यवधान**)..

श्रीमती मालती शर्मा : उत्तर प्रदेश में गर्भवती महिलाओं के साथ ...(**व्यवधान**)..

श्री एस.एस. अहलुवालिया : राजस्थान में महिलाओं के साथ बलात्कार हुए। ...(**व्यवधान**).. ऐसी बात मत उठाइए। ...(**व्यवधान**)..

श्रीमती मालती शर्मा : महोदया, इस देश में तो "का नारी पूज्यंते, रमन्ते तत्र देवता"। इसके सिद्वान्त को मिट्टी में किसने मिलाया? ...(**व्यवधान**).. आपकी पचास वर्षो की हुकूमत ने मिट्टी में मिलाया इस सिद्वांत को। महोदया, मैं बता देना चाहती हूं कि अगर राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में विद्युत, सड़के, पुल, रेलवे आदि सबके ऊपर चिन्ता व्यवक्त की गयी हैं और चिन्ता व्यक्त करके सरकार जनता को उन सारी चीजों को मुहैया कराना चाहती हैं जो हरेक सरकार का कर्त्तव्य होता हैं आपने पूरा नहीं किया, यह सरकार करके दिखाएगी चिन्ता मत करिए। महोदया, सरकार छोटे राज्यों का गठन करना चाहती हैं तो क्या बुराई हैं? जाकर देखिए पहाड़ो की दशा, जाकर देखिए वनों की दशा।

उपसभापति : मालती जी, आपकी पार्टी की तरफ से आपका टाइम खत्म हो गया हैं।

श्रीमती मालती शर्मा : महोदया, मैं तो खुद ही बहुत ही बोलती हूं, ज्यादा बड़ा नहीं बोलती हूं।

उपसभापति : अच्छा अब आप खत्म करिए।

श्रीमती मालती शर्मा : लेकिन यह भाई जोर लगाएं, घंटो चले जाएं तो कम से कम आप तो कुछ मेरा पक्ष करिए।

उपसभापति : मेरा नहीं हैं। वह भी आपके ही किसी भाई ने दिया हैं।

श्रीमती मालती शर्मा : महोदया, मैं कहना चाहती हूं कि छोटे राज्यों में अगर गठन सरकार करना चाहती है अगर उत्तरांचल का गठन करना चाहती हैं, वनांचल का गठन करना चाहती हैं- उन लोगों के हाथों में उनकी सत्ता सोपिए, वह अपनी दशा आप सुधारेंगें – तो इसमें आपको क्या कठिनाई है? आपने तो उसके नाम पर खून बहाया हैं, इसलिए उत्तराखण्डवासियों ने आपको सबक सिखाया हैं। आप वहां पर अपने ही कारण चौपट हुए हैं। महोदया, सरकार लोकपाल बिल लाना चाहती हैं तो क्या बुराई हैं। यो 10 पीढ़ी तक कमा कर रखना चाहते हैं। मेरा ब्यौरा आप लीजिए। ...(**व्यवधान**).. राजनीति से भ्रष्टाचार हटाना, अपराधीकरण समाप्त करना, यह कौन सी गलत बात कहीं गई हैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में। राष्ट्रपति जी के भाषण में सहयोग करना चाहिए। ...(**व्यवधान**)..

श्री एस.एस. अहलुवालिया : सुखराम को डिप्टी चीफ मिनिस्टर बनाया। ...(**व्यवधान**)..

श्रीमती मालती शर्मा : महोदया, अन्त में मैं एक ही बात कहना चाहती हूं ...(**व्यवधान**).. अहलुवालिया जी मैं हरियाणा की हूं हरियाणा की। आपकी आवाज से बुलन्द आवाज हैं मेरी। आपकी आवाज से बहुत ऊंची आवाज हैं मेरी। आप अगर चिल्लाकर बोल सकती हूं। ...(**व्यवधान**).. आप चिल्लाकर मत बोलिए। ...(**व्यवधान**)..

श्री एस.एस. अहलुवालिया : 13 दिन सदन नहीं चलने दिया, भ्रष्टाचार की बात करते हैं। ...(**व्यवधान**)..

श्रीमती मालती शर्मा : यह स्वर्ण-जयन्ती का वर्ष हैं। देश में गांधी जी के बलिदान का भी पचासवां वर्ष हैं। यदि हम सच्चे हृदय से गांधी जी के नाम को जिन्दा रखना चाहते हैं तो घर में भी सच्चाई बरतनी होगी, हमें

†[]Transliteration in Arabic Script

अपने परिवार में भी सच्चाई बरतनी होगी, हमें समाज में भी सच्चाई बरतनी होगी। मैं कुछ बातें कहना चाहती थी लेकिन मैं जानती हूं कि आपके अन्दर वह दिल, गुर्दा नहीं हैं कि आप अपनी बुराई को सुन सकें। इसलिए मैं अपनी बात यही समाप्त करती हूं, नहीं तो अहलुवालिया जी को पता नहीं क्या हो जायेगा।

उपसभापति : ऐसा हैं कि मैं एक अनाउन्समेंट कर रही हूं। जो रिटायरिंग मेम्बर हैं आज उनके लिए डिनर हैं इसलिए हाउस जल्दी एडजार्न करना पड़ेगा। मेरी मेम्बर्स से यह रिक्वेस्ट हैं कि वह अपने भाषण को थोड़ा संक्षेप में बोलें और जो दूसरे सदस्य उनके भाषण को लम्बा करने की कोशिश करते हैं इन्टरेप्ट करके, वह भी ना करें। अदरवाइज नोबड़ी विल बी एबल टू स्पीक। कल प्रधानमंत्री जी जब जवाब दे देंगे तो यह इन्टरेप्सन में रह जायेगा इसलिए आप लोग भाषण करना चाहते हैं तो कर लीजिए । श्री रामदेव भंडारी।

श्री महेश्वर सिंह(हिमाचल प्रदेश) : मैडम, भाषण छोटा हो जायेगा। मगर यह जो बीच में टोका टाकी होती हैं यह नहीं होनी चाहिए। ...(**व्यवधान**)..

श्री एस.एस. अहलुवालिया : हमारी परेशानी हैं जय श्रीराम को छोड़ करके जय सुखराम पकड़ हैं। ...(**व्यवधान**)..

उपसभापति : अहलुवालिया जी, ...(**व्यवधान**)..

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता : (मध्य प्रदेश) : यह पैदावार आपकी हैं। ...(**व्यवधान**)..

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी : आपने बोया, हमने काटा। ...(**व्यवधान**)..

उपसभापति : आर्डर। सुखराम जी जब इस तरफ बैठते थे तो भी हाउस नहीं चल रहा हैं। आप उनको भूल करके अपना हाउस चलाइये। *की बात अनपार्लियामेंट्री थी, सो आई रिमूव इट बीकाज पंजाब विधान सभा के अन्दर यह 1972 में कहा गया था कि * की बात अनपार्लियामेंट्री है। इसलिए में यहां से * सब खत्म कर रही हूं। चलिए। बोलिए।

श्री राम देव भंडारी (बिहार) : माननीय उपसभापति जी, मैं इसी 25 मार्च को महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा संसद के संयुक्त अधिवेशन में दिए गए भाषण पर आपने विचार प्रकट करने के लिए खड़ा हुआ हूं। महोदया, जब आदरणीय जनेश्वर मिश्र जी बोल रहे थे तो उन्होने एक बात कहीं थी कि इस बार महामहिमा का भाषण बहुत ही उदास था। मैं भी इस बात को महसूस करता हूं। चूंकि उस समय वाजपेयी जी की सरकार अल्पमत में थी पूर्व का जो अनुभव था , कटु अनुभव था, कटु अनुभव 13 दिन की सरकार का, वह उनके पीछे था और उस समय कम से कम उन्हे कोई उम्मीद नहीं थी इसलिए महामाहिम राष्ट्रपति जी का भाषण एक उदास भाषण था, औपचारिकता मात्र था और अगर दूसरे शब्दों में कहें तो बढ़े- बढ़े खोखले दावों,उ आश्वासनों से भरा हुआ श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार द्वारा तैयार किया हुआ भाषण था।

म.प्र. 4.00

महोदया, इस सरकार को जनादेश नहीं था। सरकार बनाने की बात वे बार-बार कहते रहे। मगर सभी लोग जानते हैं, सभी देशवासी जानते हैं कि इनके कुल 252 सदस्य जीतकर आए थे। इनकी पार्टी के कुल मिलाकर इनके 252 सदस्य चुनकर आए। वोटों का प्रतिशत भी इनके पक्ष में 35 प्रतिशत पड़ा। इसके बाद भी सरकार बनाने के लिए जिस तरह का जोड़तोड़ जिस तरह का तिकडम , जिस तरह की सौदेबाजी इन्होने की वह एक मिसाल हैं। मैं इसलिए कह रहा हू कि बीजेपी के जो हमारे साथी हैं, मित्र हैं उन्होने सदैव सदाचार, नैतिकता, स्वच्छ प्रशासन , इन सब शब्दों का लगातार प्रयोग किया हैं। लेकिन उन्होने इस बार सरकार बनाने के लिए इन सारी परम्पराओं, मान्यताओं,मूल्यों को तिलांजलि दे दी। जैसे तैसे इनकी सरकार बन गई। जैसे ही श्री वाजपेयी जी ने शपथ ग्रहण की, उसके बाद से ही उन्होने एक बात पर बहुत जोर दिया कि वह सहयोग, मेल-मिलाप आम सहमति के इच्छुक हैं। जब वे अपोजीशन में बैठते थे तो उस समय उनको सहयोग, मेल-मिलाप और आम सहमति कही दिखाई नहीं पड़ती थी। लेकिन अब जब उनको जरूरत पड़ी हैं, आज जब वह सरकार में बैठे हैं तो उनको सहयोग चाहिए, मेल-मिलाप चाहिए और आम सहमति चाहिए। मैं पूछना चाहता हूं कि आपको किस तरहका सहयोग चाहिए? क्षमा करेंगे, हमारे डा. लक्ष्मी प्रसाद जी, जो तेलुगु देशम पार्टी के हैं उन्होने जिस तरह से सहयोग दिया हैं क्या वही सहयोग आपको चाहिए? क्या जिस तरह से आप होम मिनिस्ट्री सुश्री मायावती जी को दे कर अपनी ओर मिलाने का प्रयास कर रहे थे क्या वही सहयोग चाहिए। ...(**व्यवधान**)..

डा. वाई. लक्ष्मी प्रसाद (आन्ध्र प्रदेश) : इन्होने मेरा नाम लिया है। ...(**व्यवधान**)..

श्री रामदेव भंडारी : वह लोकसभा में बोली है। ...(**व्यवधान**)..

डा. वाई. लक्ष्मी प्रसाद :इन्होने मेरा नाम लिया हैं इसलिए ...

उपसभापति : आपका नाम लिया?

श्री रामदेव भंडारीः मैंने कहा कि जिस तरह से तेलुगु देशम ने दिया ...(**व्यवधान**)..

THE DEPUTY CHAIRMAN: What is this? Why arc you taking her name? Please sit down. *...((Interruptions)...* Just one minute *...(Interruptions)...* What did he say? *...(Interruptions)...* The words "Telugu Desam" are not unparliamen tary. 1 must put the record straight. In this House there are various political parties, perhaps, 24 or 25 or 26 parties. If the Member is taking the name of your party, it doesn't mean that you should get up and correct it. You reply to it when you get your time. In this way I am not going to finish the debate. You will not get your time. Let him finish. If he says "Telugu Desam", it is okay, when you get your turn, you reply to it. It is not unparliamentary. *...(Interruptions)...* Please don't get up. Please sit down. If there is an allegation, you can reply to it when you get your time *...(Interruptions)...* Please don't interrupt. 1 will not allow any *Interruption.*

श्री रामदेव भंडारी : मैं कह रहा था महोदया कि आम सहमति की बात करते थे और प्रारंभ में ही जिस तरह से किया गया, मैं उसको यहां पर नहीं कहना चाहता। लेकिन जिस तरह से स्पीकर के चुनाव में आम सहमति की बात हुई और फिर जो हुआ, इसको मैं दोहराना नही चाहता। इसमें उनकी कथनी कुछ हैं और करनी कुछ हैं। अगर आपको कथनी और करनी में फर्क करना था तो फिर आप किस तरह से सहयोग की उम्मीद करते हैं? महोदया, अभी जब जनेश्वर मिश्र जी बोल रहे थे तो उन्हो कहा कि भय, भूख और भ्रष्टाचार की बाते की थी। कैसे मिटायेंगे आप भय? 6 दिसम्बर को बाबरी मस्जिद के ध्वंस के बाद देश के कई शहरों में जो कुछ हुआ, जो खून-खराबा हुआ, हिंसा का जो नंगा नाच हुआ, उससे हजारों लोग मारे गए। अभी तक श्रीकृष्ण आयोग की रिपोर्ट ठंडे बस्ते में पड़ी हुई हैं। उस पर कार्यवाही नहीं हुई हैं। कैसे विश्वास दिलायेंगें जो 20 करोड़ इस देश की माइनारिटीज हैं? आपकी सरकार आने के बाद वह बिल्कुल दहशत की स्थिति में हैं, आप उनको कैसे विश्वास दिलायेंगे? कैसे आप उनका सहयोग चाहते हैं? आपकी अपनी स्थिति स्पष्ट करनी पड़ेगी, सरकार को अपनी नीतियों को स्पष्ट करना पड़ेगा कि उनके साथ आप कैसा व्यवहार करेंगे? उनको जो गहरा घाव लगा हैं, उस पर आप कैसे मरहम पट्टी करेंगे? उस को आप कैसे भरेंगे?

भ्रष्टाचार की बात होती हैं। इनका भ्रष्टाचार के संबंध में बिल्कुल अलग-अलग नजरिया है। अगर बिहार के भ्रष्टाचार की बात उठेगी तो हंगामा खड़ा कर देंगे, बिहार सरकार का इस्तीफा मांगेगे। सुख राम जब कम्यूनिकेशन मिनिस्टर थे तब उनके भ्रष्टाचार की बात हुई थी। उस समय भारतीय जनता पार्टी के भाइयों ने संसद् नहीं चलने दी। लोकसभा नहीं चलने दी, राज्य सभा नहीं चलने दी। आज सुख राम उनके परम् प्रिय हो गए हैं। आज उनका सारा भ्रष्टाचार खत्म हो गया। इनकी गंगा में नहा कर वह बिल्कुल पवित्र हो गए। ...(**व्यवधान**)...

एक माननीय सदस्य : गंगा स्नान करवा दिया । ...(**व्यवधान**)...

श्री रामदेव भंडारी : यह हैं इनका भ्रष्टाचार के प्रति नजरिया। इनका भ्रष्टाचार इनकी जो राजनीति है, उस दृष्टि से देखा जाता हैं। जिस भ्रष्टाचारी से उनको फायदा होने वाला हैं, उनको गंगा मे नहला कर पवित्र करवा देते हैं। वैसे यह राम को भी उसी तरह से यूटीलाइज करते हैं। एक हथियार के रूप में करते हैं, भगवान के रूप में नहीं मानते हैं। उसी तरह से सुख राम को भी ले कर आए हैं। वह आज इनके लिए पवित्र हैं यह हैं भ्रष्टाचार की इनकी परिभाषा। यह हैं भ्रष्टाचार के प्रति इनका नज़रिया। यह दोहरा मापदंड हैं, दोहरा चरित्र हैं। भारतीय जनता पार्टी को इस दोहरे चरित्र से किसी तरह का सहयोग नहीं मिल सकता हैं। अगर आप सहयोग चाहते हैं, चेहरा तो आपने बदल लिया हैं, अपने मन को भी बदलिये, आत्मा को बदलिये। आत्मा बदलेगी। आपका मन बदलेगा तो सहयोग मिलेगा। सब लोग मिल कर देश चलाना चाहते हैं। मुख में राम बगल में छुरी रहेगी तो आपको किसी तरह का सहयोग मिलने वाला नहीं हैं।

राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में सेकुलरिज्म की चर्चा की गई हैं। जब हम सेकुलारिज्म की बात बोलते थे,अभी भी बोलते हैं, हमारा मज़ाक उड़ाया करते थे। यह हमारा मजाक उड़ाया करते थे कि यह सेकुलारिज्म क्या चीज हैं। उसको वह कहते थे छदम् धर्म निरपेक्षता। अब यह भारतीय जनता पार्टी ब्रांड सेकुलारिज्म लाए है। पता नहीं इनका ब्रांड क्या हैं। यह कहते थे छद्म धर्म

निरपेक्षता बनाम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सेकुलरवाद बनाम पंथ निरपेक्षता। सेकुलारिज्म का मजाक उड़ाया करते थे। आज जब यह पावर में आ गए हैं, सत्ता में आ गए हैं तो उनको सेकुलरिज्म शब्द याद आ गया हैं। मैं फिर दोहराना चाहता हूं। यहां करोड़ो मुसलमान ळैं या जो दूसरे अल्पसंख्यक हैं उनको विश्वास में लेने की जरूरत हैं। सेकुलारिज्म तो भारतीय संविधान की आत्मा हैं, और इस सेकुलारिज्म को सच्चे अर्थो में आपको अपनाना पड़ेगा तब सेकुलरिज्म का सही अर्थ जान पाएंगे। यह देश विभिन्न धर्मो का देश हैं। विभिन्न धर्मो और जातियों के लोग इस देश में रहते हैं, बरसों से रहते आए हैं। हमें सभी धर्मो का आदर करना चाहिये चाहे वह हिन्दु धर्म हो या मुस्लिम धर्म हो। सभी का आदर करना चाहिये। ऐसा नहीं कि यह कहें कि गर्व से कहो कि हम हिन्दू हैं। गर्व से कहों हम भारतीय हैं। हम भी हिन्दू हैं लेकिन ऐसे हिन्दू नहीं हैं जो इनकी परिभाषा हिन्दू की हैं। अभी जो सुप्रीम कोर्ट की परिभाषा आई हैं, उस परिभाषा को ध्यान में रखिये, याद कीजिये।

श्री लम्खीराम अग्रवाल : वह हैं हमारी परिभाषा। आपको गलतफहमी हैं।

श्री रामदेव भंडारी : आपकी परिभाषा दूसरी हैं। राजनीति को अपराधीकरण से मुक्त करना चाहते हैं। क्या रिकार्ड हैं उत्तर प्रदेश के कुछ मंत्रियों का? आप रिकार्ड देखिये। आप खुद देखिये कैसे-कैसे लोगों को आपने मंत्री बनाया हैं। जब पार्लियामेंट का टिकट वितरण हो रहा था उत्तर प्रदेश में, एक महिला मंत्री, जहां तक मुझे याद हैं, वह कह रही थी कि उसके पति के हत्यारे को टिकट दिया जा रहा हैं। वह लगातार विरोध कर रही थी। मैंने अखबारों में पढ़ा हैं। फिर भी उसको टिकट दिया गया। अभी भी वह महिला मंत्री हैं उत्तर प्रदेश में। उस महिला के पति का जो हत्यारा हैं उसको टिकट दिया गया। क्या इसी तरह पालिटिक्स को क्रिमनलाइजेशन से मुक्त करना चाहते हैं।

महोदया, इन्होने लिखा हैं कि राज्यपाल का जो पद हैं विवाद से मुक्त होना चाहिए और राज्पाल के पद का राजनीति करने के लिए दुरूपयोग नहीं करना चाहिए या उपयोग नहीं करना चाहिए। बहुत अच्छी बात हैं कि राज्यपाल का जो पद हैं वह विवाद से मुक्त होना चाहिए। राजभवनों का प्रयोग राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए नहीं होने दिया जाना चाहिए या नहीं किया जाना चाहिए। बहुत अच्छी बात हैं। पर महोदया, पूरा देश जानता हैं कि मायावती की बी.एस.पी. पार्टी का एक तिहाई मेम्बर अलग नहीं हुआ था और क्याकिया स्पीकर ने? कैसा जजमेंट दिया संविधान सम्मत? वह कहते हैं कि संविधान यही कहता हैं कि जबकि सारा देश यह जानता हैं कि दलबदल कानून पूरी तरह से उन विधायकों पर लागू था। ठीक हैं राज्यपाल के पद का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए। स्पीकर के पद का क्या होना चाहिए? अगर किसी भी राज्य का स्पीकर अपने पद का दुरूपयोग करता हैं तो उसके साथ क्या व्यवहार होना चाहिए?

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: Madam, are you permitting a discussion on the conduct of the Speaker?

श्री राजदेव भंडारी : नहीं नहीं, राज्यपाल की बात आई हैं। यह जो मैं कह रहा हूं, मेरी दूसरी भावनपा हैं। कोई उसी स्पीकर के बारे में नहीं सभी स्पीकारों के बारे में मैं कह रहा हूं ...(**व्यवधान**)...

श्री शिवचरण सिंह (राजस्थान) **:** भंडारी जी, भंडारी की बात करें। स्पीकर की बात क्यों कर रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री रामदेव भंडारी : मैं आपकी ही बात कर रहा हू ...(**व्यवधान**)...

उपसभापति : भंडारी जी, कोई भी बात कहें तो मतलब जो दूसरे हाउस के पीठासीन अधिकारी हों उनके बारे में न कहें।

श्री रामदेव भंडारी : मैं कोशिश कर रहा हूं। राज्यपाल की चर्चा आई इसलिए मैं बात कर रहा था। महोदया, दलबदल कानून की बात चली हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री हेच. हनुमनतप्पा (कर्णाटक) **:** जब पालिटिक्स करते हैं तो बोलना ही पड़ता है। जब सब्जेक्ट डिसकस कर रहे हैं तो उसको छोड़कर डिसकस कैसे करें मैडम। पालिटिक्स नहीं खेल रहे हैं? ...(**व्यवधान**)... पीठासीन अधिकारी पालिटिक्स नहीं खेल रहे हैं?

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: You can discuss it as part of the Anti-Defection Bill.

श्री एस. एस. अहलुवालिया : एण्टी डिफेक्शन का वन थर्ड मेम्बर होता हैं, वन थर्ड मेम्बर 25 मेम्बर होते थे ...(**व्यवधान**)... I would like to know if any decision has been taken.

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: We are not discussing that at the moment. *(Interruptions)* You discuss it, you criticise it, I have no objection. Why should you bring in the office of Speak-

er? *(Interruptions)* You can discuss il as part of the Anti-Defection Bill.

श्री वसीम अहमद : स्पीकर साहब ने क्या-क्या घपले किए। अगर गवर्नर साहब के बारे में कहा गया तो ...(**व्यवधान**)...

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: You can discuss it as part of the Anti-Defection Bill.

श्री रामदेव भंडारी : महोदया, गवर्नर अगर ईमानदार चाहते हैं तो स्पीकर को भी ईमानदार होना चाहिए ...(**व्यवधान**)...

उपसभापति : जस्ट वन सेकेंड।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी : शब्दों को आप देख लीजिए ...(**व्यवधान**)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will see at. देखिए, सवाल यह हैं कि जब एंटी डिफेक्शन बिल की बात आती हैं। The Anti-Defection Bill was passed by Parliament, the Lok Sabha and the Rajya Sabha. I have my feeling that when a Bill which has been passed by Parliament and which is implemented in the State, if there is any violation of it, the Members can refer to it. But individually, don't criticise it. You can criticise it if it is not being implemented *in toto,* as the spirit of the Bill is. That you can do. After all, this is a Bill which has been passed by both the Houses of Parliament. So, that can be discussed. But individually, the conduct of a person by name should not be discussed.

• SHRI NILOTPAL BASU: Madam, can I seek a clarification? *(Interruptions)* Apart from that, I think we are not referring to the actual proceedings of the U.P. Assembly but to the ruling of the Speaker, which is again public property and part of the constitutional history of this country, and if the Parliament, as part of the Constitution, cannot discuss that, what else shall we discuss? *(Interruptions)* It is the ruling which is being discussed.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now I have clarified it. I have clarified it. He will speak within that framework. Okay? I have clarified it. Mr. Bhandari is capable to keep himself within those limits.

श्री मोहम्मद आजम खान : अभी पंजाब की असेंबली की रूलिंग कोट करते हुए दादगिरी लफ़्ज़ को निकाला ...(**व्यवधान**)...

उपसभापति : नहीं, दादागिरी नहीं निकाला, ठेके बंद कराए थे ...(**व्यवधान**)... अच्छा, आप बैठ जाइये। बोलने दीजिए।आप लोग एक छोटी सी बात पर समय नष्ट करते हैं। बोलिए।

श्री रामदेव भंडारी : महोदया, मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि दल-बदल कानून किस पर नहीं लागू होगा। पार्टी का अगर एक-तिहाई मैबर अलग हो जाता हैं तो वह दल-बदल के परव्यू में नहीं आता। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं, महोदया, इस देश में बहुत सारी ऐसी संस्थाएं हैं जो धर्म के नाम पर उन्माद फैलाती हैं, दंगा कराती हैं, उन संस्थाओं के बारे में राष्ट्रपति जी के भाषण में कोई चर्चा नहीं हैं। ऐसी संस्थाओं को प्रतिबंधित किया जाए चाहे वे किसी भी कम्युनिटी, किसी भी रिलिजियन से संबंधित हों। अगर सरकार यह महसूस करती हैं, जनता यह महसूस करती हैं कि इन संस्थाओं के माध्यम से धर्म के नाम पर उन्माद फैलाया जाता हैं, धर्म के नाम पर राजनीति की जाती हैं तो इन संस्थाओं पर बंधन होना चाहिए, ऐसा राष्ट्रपति जी के भाषण में नहीं हैं। मैं सरकार से आग्रह करता हू कि ऐसी संस्थाओं को लोकेट करके, देख करके उन पर बंधन लगाया जाए।

महोदया, बड़ी अच्छी बात हैं कि महिलाओं को स्नातक स्तर तक निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था राष्ट्रपति जी के भाषण में की गई हैं। पर मैं कहना चाहता हूं िक वैसे भी शिक्षा के क्षेत्र में हमारा देश अभी बहुत पिछड़ा हुआ हैं, खास करके महिलाएं शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पिछड़ी हुई हैं। देश की 70 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती हैं। गांवों में महिलाओं के पढ़ने की कोई उम्मीद नहीं हैं इसलिए कि गांवों में महिलाओं के पढ़ने के लिए, लड़कियों के पढ़ने के लिए स्कूल नहीं हैं। ठीक हैं, आप बी.ए. स्तर तक शिक्षा निःशुल्क करेंगे, पर बी.ए. तक महिला पहुंचेगी तब तो आप उसको निःशुल्क पढ़ायेंगे। इसलिए मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि गांवों में प्राइमरी स्कूल, हाई स्कूल खोले जाएं जिसमें लड़कियों को शिक्षा दिलाई जा सके, महिलाओं को शिक्षा दिलाई जा सके। उसके बाद वे महिलाएं फिर

आगे बढ़ करके बी.ए. की शिक्षा प्राप्त करेंगी। अब शिक्षा की बात चली है। इस देश में दो तरह की शिक्षाएं होती हैं। एक गरीब का बेटा, गरीब का बेटी म्युनिसिपल स्कूल में पढ़ते हैं और दूसरे अमीरों के बेटे जो दिल्ली पब्लिक स्कूल में पढ़ते हैं,तो क्या दोनों एक-दूसरे का मुकाबला कर पायेगे? हरगिज नहीं। इसलिए हमेशा हम समान शिक्षा की बात करते हैं। इस देश का कोइ भी नागरिक हो, चाहे गरीब का बेटा हों, चाहे बड़े आदमी का बेटा हो, सब को अगर समान शिक्षा मिलेगी तब वे एक दूसरे का मुकाबला कर पायेंगे। इसलिए जो पब्लिक स्कूल है या तो उनमें गरीबों के बेटों का भी एडमिशन हो या फिर जो सरकारी स्कूल है उनका स्तर इतना ऊंचा उठाइये कि वे पब्लिक स्कूल के स्तर तक चले जाएं। ऐसी व्यवस्था सरकार करें, ऐसा हम आपसे आश्वासन चाहते हैं।

महोदया, शैक्षणिक संस्थाओं मे आरक्षण की बात की गई हैं। सामजिक टकराव, सामजिक समरसता तथा न्याय की बात की गई हैं। इस देश में लगभग 52 प्रतिशत पिछड़े वर्ग के लोग हैं। 23-24 प्रतिशत अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के हैं। इस देश के संपूर्ण देशवासिश्यों को अभी तक जो उनका हक , जो अधिकार और जो उनको न्याय मिलना चाहिए वह नहीं मिला है। मैं कहना चाहता हूं कि देश के दस प्रतिशत लोग, दस प्रतिशत लो देश की आबादी हैं जिसको इलीट क्लास कहते हैं, उन्होने 90 प्रतिशत का हक मारकर रखा हैं। इसीलिए वह जो 52 प्रतिशत पिछड़े वर्ग के लोग हैं वे जो अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोग हैं और जो दूसरे वर्गो के भी गरीब लोग हैं उनको न्याय मिलने की आवश्यकता हैं। उनके लिए आरक्षण करने की आवश्यकता हैं मुझे न्यायापालिका के प्रति बहुत सम्मान हैं। मैं चाहता हूं कि न्यायापालिका में भी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्गो के आरक्षण मिले। यह मैं इसलिए कहना चाहता हूं कि जिस बैकग्राउंड से वह आते हैं, उन्होने उस दर्द को झेला है। जो शेड्यूल कास्ट के लोग हैं, जो शेड्यूल ट्राइब्स के लोग हैं, जो पिछड़े वर्ग के लोग हैं, उन्होने पीड़ा झेली हैं। जुडीशियरी में अगर इस तरह से लोग आएंगे तो वह उन को न्याय देंगे। इसी तरह जुडिसियरी में जो गरीब लोग है, पिछले लोग हैं, उन को आरक्षण मिलना चाहिए । इस संबंध में भी सरकार को सोचना चाहिए।

उपसभापति : भंडारी जी, अब समाप्त कीजिए। आप की पार्टी के टाइम में से श्री नरेश यादव जी के लिए टाइम नहीं बचेगा।

श्री राम देव भंडारी : महोदया, अभी मिश्र जी भाषा के सवाल पर बोल रहे थे। मैं संसदीय राजभाषा समिति का सदस्य हूं और उपाध्यक्ष भी हूं। हमारे साथी जाटिया साहब, मंत्री हो गए हैं, वह भी उस के मेंबर थे। चतुर्वेदी साहब बैठे हुए हैं, वह भी मेंबर थे। इस संसदीय राजभाषा समिति में 30 मेंबर हैं जिस में से 20 लोक सभा से हैं और 10 राज्य सभा से हैं। महोदया, दुनिया में अब बहुत ही कम देश ऐसे बचे हैं जोकि अपने देश की भाषा में काम नहीं करते और विदेशी भाषा का उपयोग कर रहे हैं। फिर हमें आजादी मिले 50 वर्ष भी हो गए हैं और हम आजादी की स्वर्ण जंयती मना रहे हैं, मगर 50 वर्ष के बाद भी हमारी अपनी कोई भाषा नहीं हैं। संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया हैं। हमारी जो क्षेत्रीय भाषाएं हैं, जिन 18 भाषाओं की इस में चर्चा की गयी हैं, हम उन का बहुत सम्मान करते है। हम चाहते हैं कि अपने-अपने क्षेत्रों में वह सभी भाषाएं फूलें-फलें, पूरी तरक्की करें। हम उन भाषाओं का पूरा सम्मान करते हैं, ऐसा नहीं हैं कि हम उस का विरोध करते हैं,मगर हमारी एक ऐसी भाषा होनी चाहिए जिस में पूरे देश के लोग उस भाषा में कम से कम एक दूसरे की बात समझ सकें। वह संप्रेषण – की भाषा, आपस से बोलचाल की भाषा अगर कोई हो सकती हैं, तो वह सिर्फ हिंदी हैं जोकि हिंदुस्तान के बड़े भू-भाग में बोली जाती हैं।

उपसभापति : वह भाषा सिर्फ प्यार-मोहब्बत की भाषा होती हैं, लड़ाई-झगड़े की भाषा नहीं होती हैं

(Interruptions)... Now let him speak. Forget it. It is his viewpoint. Let fiim speak, at least. He wants to say some-

flmg in his own language. It is his viewpoint. Why should you get irritated? Nobody is going to implement his views *in toto.* He has a right to speak.

श्री राम देव भंडारी : अगर एक भाषा पूरे देश मे समझी जाए तो भाईचारा, प्यार-मोहब्बत और दोस्ताना संबंध एक-दूसरे के साथ बढ़ेगे। महोदया, अंग्रेजी को अब इस देश से जाना चाहिए। उस का स्थान कोई क्षेत्रीय भाषा ले ले, यह हमें मंजूर हैं मगर अंग्रजी को इस देश से अब जाना चाहिए हमारी गुलामी को गए अब 50 वर्ष बीत गए हैं। इसलिए मैं अनुरोध करूंगा कि जो हमारे दक्षिण के भाई हैं, हम उन की भाषाओं का भी बहुत आदर करते हैं। महोदया, अंत में मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि अगर आप सचमुच में हमारा सहयोग चाहते हैं, विरोधी दलों का सहयोग चाहते हैं तो नीयत बदलिए।

महोदया, एक कहावत हैं—

"मन न रंगाए, रंगाए जोगी कपड़ा"।

आप सिर्फ कपड़ा रंगकर जोगी बनना चाहते हैं। ऐसा मत कीजिए। आत्मा को बदलिए मन को बदलिए। देश की सेवा करने का संकल्प लीजिए। आप को सहयोग मिलेगा। उस तरह का सहयोग जैसा कि सुखराम जी से ले रहे हैं, उस सहयोग की हम से आशा मत कीजिए।

इन्ही शब्दों के साथ मैं आप को धन्यवाद देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपसभापति : श्री मूलचन्द मीणा। मीणा जी, 10 मिनिट बोलिएगा।

श्री मोहम्मद मसूद खान : मैडम, मेरा एक पांइट ऑफ आर्डर हैं। जब हम गांव में जाते हैं तों हमारे सामने खसरा और खतौनी आता हैं। उस खसरे में 17 कालम्स रहते हैं और आखिरी में खाना-कैफियत रहता हैं। आप के यहां भी जो खाना हैं, उस में आखिर में अदर्स में 17 आदमी हैं और एक आदमी की नौबत नहीं आ रही हैं तो आप खाना कैफियत जरा खोल दीजिए।

†شری محمد مسعود خان: میڈم ایک پوائنٹ آف آرڈر ہے جب ہم گاؤں میں جاتے ہیں تو ہمارے سامنے خسرہ اور کھتونی آتا ہے اس خسرے میں ۱۷ کالمس رہتے ہیں اور آخری میں خانہ کیفیت رہتا ہے آپکے یہاں بھی جو خانہ ہے اس میں آخر میں ادرس میں ۱۷ آدمی ہیں اور ایک آدمی کی نوبت نہیں آرہی ہے تو آپ خانہ کیفیت ذرا کھول دیجئے۔

उपसभापति : मूलचन्द मीणा जी के बाद आएगा 17 का नंबर।

श्री मूल चन्द मीणा (राजस्थान) : उपसभापति महोदया, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर इस माननीय सदन में कल से चर्चा हो रहीं हैं। इस अभिभाषण की प्रति को पढ़ने के बाद मुझे ऐसा महसूस हुआ कि लास्ट पैराग्राफ में आम सहमति की बात कहकर महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण का निचोड़ रख दिया हो। राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के अंदर जो था, उसको आम सहमति में अपने आपको, सारी बात को छोड़ने की बात इन्होने की। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि प्रजांतत्र के अंदर कोई भी दल जो चुनाव लड़ता हैं तो वह जनता के बीच में जाता हैं और जनता को विश्वास दिलाता हैं अपनी बात कहकर, कि हम यदि सत्ता में आए, हमारा राज बना तो हमारा यह मैनिफेस्टों होगा और इसमें जो हम दे रहे हैं, जो आपको बता रहे हैं, उसी के आधार पर हम राज करेंगे। मेरी समझ में यह नहीं आता कि इनकी यह सरकार बनने के बाद वह मैनिफेस्टों क्यों गायब हो गया और क्यों यह राष्ट्रीय एजेण्डा बना लिया गया? इससे ऐसा लगता हैं कि आज की राजनीति सत्ता की राजनीति हैं और सत्ता के लिए जो नीति, जो उद्देश्य, जो मूल्य थे उनको आप छोड़ रहे हैं। केवल सत्ता के लिए राष्ट्रीय एजेण्डा के नाम पर या आम सहमति के नाम पर जो हमारा बेसिक चेहरा था, जो हमारी शक्ल थी, उस शक्ल को भूलकर एक नई शक्ल पैदा कर रहे हैं। इससे ऐसा लगता हैं कि आज भारतीय जनता पार्टी की सरकार जो केन्द्र के अंदर बनी, उन्होने अयोध्या, धारा 370 और नागरिक समानता की बात को छोड़ दिया हैं। यह एक अच्छी बात है, लेकिन हमें विश्वास नहीं होता कि राष्ट्र की जनता को जब हम इतना बड़ा मैनिफेस्टों देकर चुनाव लड़ते हैं तो उस मैनिफेस्टो को हटाया जाए। क्या इस प्रकार राष्ट्र की जनता से असत्य कह सकते हैं।

महोदया, जो आपने एजेंडा बनाया, जो आपके मूल सिद्वात रहे हैं, जो आपकी नीतियां रही हैं,िजनके आधार पर आपका दल चलता रहा हैं, उनको आपने छोड़ दिया, यह हमें विश्वास नहीं होता। कहीं आप ऊपर से दिखाने के लिए तो राष्ट्रीय एजेंडें की बात तो नहीं करते? कहीं आपके अंदर, आपके दिल के अंदर जो बेसिक सिद्वांत हैं, उनको कहीं आप दुबारा पुनजीर्वित या मजबूत तो नहीं कर रहे? इस बात का अंदेशा बना हुआ हैं। प्रधानमंत्री जी को इस सदन के अंदर माननीव सदस्यों को इस बात का विश्वास दिलाना होगा कि इस प्रकार की दोगली नीति, इस प्रकार का दोगला व्यवहार, दुतर्की नीतियां हमारी नहीं होंगी और जो हमारा राष्ट्रीय मुद्दा हैं वह सरकार का एक रहेगा, भारतीय जनता पार्टी का यही मुद्दा रहेगा।

महोदया, इस माननीय सदन में सुन्दर सिंह भंडारी जी कह रहे थे, जो भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष भी हैं, कि सरकार का राष्ट्रीय मुद्दा हैं, राष्ट्रीय एजेण्डा हैं, लेकिन भारतीय जनता पार्टी का मुद्दा भारतीय जनता

†[ ]Transl iteration in Arabic Script

पार्टी की नीतियां ही हैं। जो मैनिफैस्टों के अंदर हैं, वहीं भारतीय जनता पार्टी की नीतियां है। इससे ऐसा लगता हैं कि कुर्सी की बात के लिए तो हम आम सहमति की बात करें, चाहे सेकुलर की बात हों, चाहे किसान की बात हो, चाहे शिक्षा की बात हों, चाहे महिला आरक्षण की बात हैं, लेकिन बेसिक मूल, जो मूल सिंद्वात उस पार्टी के हैं वह तो रहेंगे। इससे तो कभी भी राष्ट्रीय एजेण्डे की भूल-भुलैया दे सकते हैं राष्ट्र के लोगों को, दूसरे दलो को, जिनको राज करने के लिए, सत्ता भोगने के लिए बहकाया जा सकता हैं। उनसे असत्य बोला जा सकता हैं। बेसिक अयोध्या, धारा 370 को भारतीय जनता पार्टी को छोड़ना पड़ेगा और कहना पड़ेगा। प्रधानमंत्री जी को, इस सदन के अंदर स्पष्ट बताना पड़ेगा कि ऐसा कोई मुद्दा मेरी पार्टी का नहीं हैं। सुन्दर सिंह भंडारी जी ने जब यह बात कहीं तो मेरे दिल के अंदर मुझे घबराहट हुई कि यह इस तरह का पाप राष्ट्र के अंदर क्यों किया जा रहा हैं? सत्ता के अंदर बैठकर उन पार्टी, विश्व हिन्दू परिषद , बजरंग दल लड़ते रहे है, उन चीजों को मजबूत करने के लिए, उन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कहीं यह सरकार अपना सहयोग नहीं देगी, इस बात का विश्वास इस देश की जनता को आपको देना पड़ेगा।

महोदया, आम सहमति की बात कहीं गई। अच्छी बात के लिए तो आम सहमति की बात सब कर लेते हैं, लेकिन जब बुरी बात, गलत बात, इनकी स्वार्थ सिद्वि की बात होती हैं तो उसमें आम सहमति की बात नहीं लेते हैं। कैसे विश्वास किया जाए कि इनकी आम सहमति कैसे होगी और इनकी आम सहमति का कौन सा रास्ता होगा, कौन सी दिशा होगी? अभी 4-5 दिन पहले लोक सभा में आम सहमति की बात करते-करते रातों-रात आम सहमति की बात करते करते रातों-रात आम सहमति बदल गई स्पीकर के चुनाव के मामले पर। क्या आम सहमति की मतलब भ्रष्टाचार से समझौता करना भी होता हैं? हिमाचल प्रदेश में आम सहमति हो गई सुखराम जी से। महोदया, इस संसद को 13 दिन तक जिन लोगों ने चलने नहीं दिया, वही लोग एक रात में आम सहमति के नाम पर भ्रष्टाचार भूल गए। राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में भ्रष्टाचार को मिटाने की बात कहीं गई हैं लेकिन मुझे ऐसा लगता हैं कि सरकार ने राष्ट्रपति जी के अभिभाषण को केवल कागजो का एक पुलिंदा बनाकर रख दिया हैं लेकिन वास्ताविकता कुछ और हैं।

महोदया, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में शैड्यूल-कास्ट्स, शैड्यूल्ड-ट्राईब्ज, अल्पसंख्यको और पिछड़े वर्ग के लोगों के सामजिक, आर्थिक और राजनीतिक उत्थान की बात कहीं गई हैं और शैड्यूल कास्ट्स और शैड्यल्ड ट्राईब्ज लोगों के लिए आरक्षण को बनाए रखने के लिए उसकी रक्षा के लिए आरक्षण को बनाए रखने के लिए और उसकी रक्षा के लिए सरकार की गांरटी दी हैं लेकिन उपसभापति महोदया, मुझे यह कहते हुए बड़ा अफसोस हो रहा हैं कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार दिल्ली के अंदर हैं लेकिन जब से यह सरकार बनी हैं इसने दिल्ली में रहने वाले 10-15 लाख ट्राईबल्स, जो देश के दूसरे प्रांतो से आए हैं और यहां बस गए हैं, उनका रिजर्वेशन खत्म कर दिया है। महोदया, मैं, यह जानना चाहता हूं कि जब राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में शैड्यूल्ड-ट्राईब्ज के लिए आरक्षण की बात कहीं गई हैं तो दिल्ली में पहले जो सेंटर के डिपार्टमेंट्स में और स्टेट के डिपार्टमेंट्स मे इन लोगों के लिए रिजर्वेशन की व्यवस्था थी और जिसको खत्म कर दिया गया हैं, क्या उसे फिर से लागू किया जाएगा? अगर यह किया जाएगा तब जाकर सही मायनों में राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में जो न्याय देने की बात हैं, वह पूरी हो सकेगी। अभी तो आपकी कथनी और करनी में अंतर दिखाई दे रहा हैं। मेरा निवेदन हैं कि आप दिल्ली की सरकार को निर्देश दे कि उसने जो शैड्यूल्ड कास्ट्स और शैड्यूल्ड ट्राईब्ज का रिजर्वेशन खत्म किया हैं, उसको वह पुनः लागू करे क्योकि दिल्ली में ऐसे लोगों की आबादी करीब 15-20 लाख हैं और वे आज द्रयनीय स्थिति में हैं। प्रधानमंत्री जी को अपने जवाब में निश्चित रूप से इस बात की आश्वासन देना चाहिए और उनके अधिकारों की रक्षा होनी चाहिए।

उपसभापति : मीणा जी, जरा संक्षेप में बोलिए, मेरे पास बहुत से नाम हैं।

श्री मूलचन्द मीणा : महोदया, इस सदन की माननीय सदस्या मालती शर्मा जी अभी कह रही थीं मुसलमान भाइयों के बारे में कि अटल बिहारी वाजपेयी जी विदेश मंत्री थे और उसके बाद मध्यावधि चुनाव हुए और मैं मुसलमान बस्ती में गई तो मुसलमान भाइयों ने ये बातें कहीं। मै मालती जी को याद दिलाना चाहूंगा कि अभी पिछले दिनों जयपुर में मुसलमान भाइयों पर बिना-वजह पुलिस ने जो गोलियां चलाई 19 दिसंबर को, मालती जी, उसको भी तो याद कर लें।

श्री शिव चरण सिंह : आपको मालूम हैं झगड़े की जड़ क्या थी?

श्री मूलचन्द मीणा : आपको ज्यादा पता हैं।

श्री शिव चरण सिंह : जिम्मेदारी राज्य सरकार की हैं, राजस्थान सरकार की जिम्मेदारी हैं। कब्रिस्तान पर झगड़ा था ....(**व्यवधान**)...

उपसभापति : आप जब बोलें तो करेक्ट कर दीजिएगा।

श्री शिव चरण सिंह : वे गलत बोल रहे हैं ....(**व्यवधान**)...

श्री मूलचन्द मीणा : मालती जी, आप सो रही थीं, मैं जयपुर में था ....(**व्यवधान**)...

MD. SALIM: Are you justifying the firing?

श्री शिव चरण सिंह : लॉ ऐंड ऑर्डर रखना पड़ेगा। यह राजस्थान की सरकार थी जिसने कब्रिस्तान को बचाया ....(**व्यवधान**)...

श्री वसीम अहमद : नहीं-नहीं, लॉ एंड आर्डर मेन्टेन करने के लिए क्या लोगों को मार देंगे? यही तो बात हुई और क्या कह रहे हैं आप? यही तो आप कह रहे हैं। लॉ एंड आर्डर के नाम पर आप इंसानों को मरवा देंगे। आप लोगों को मारेंगे? लॉ एंड ऑर्डर के नाम पर यह कर रहे हैं आप। लॉ एंड आर्डर के नाम पर हजारों वह चीजें करेंगे। ....(**व्यवधान**)...

श्री मोहम्मद सलीम : आप यह जस्टिफाई कर रहे हैं। ....(**व्यवधान**)...

†شری محمد سلیم: آپ ہی جسٹیفائی کر رہے ہیں..."مداخلت"...

श्री शिव चरण सिंह : वह आपका क्या सही था ....(**व्यवधान**)...

श्री मोहम्मद सलीम : आपका जो मॉयनोरिटी सेल है, अल्पसंख्यक मोर्चा उन्होने आर्गनाइज किया हैं। ....(**व्यवधान**)...

†شری محمد سلیم: آپکا جو مائناریٹی سیل ہے الپسنکھئک مورچہ انہوں نے آرگنائز کیا ہے..."مداخلت"...

उपसभापति : आर्डर , प्लीज।

श्री मोहम्मद सलीम : आपको जरूरत क्या थी मॉयनोरिटी सेल बनवाने की ....(**व्यवधान**)...

†شری محمد سلیم : آپکو ضرورت کیا تھی مائناریٹی سیل بنوانے کی..."مداخلت"...

श्री शिवचरण सिंह : कब्रिस्तान पर नाजायज कब्जा किया ....(**व्यवधान**)...

श्री मोहम्मद सलीम : आप एक गुट को दूसरे गुट से लड़वा रहे हैं। ....(**व्यवधान**)...

†شری محمد سلیم: آپ ایک گٹ کو دوسرے گٹ سے لڑوا رہے ہیں..."مداخلت"...

श्री शिवचरण सिंह : आप तो ऐसे ही बीच में बोल रहे हैं। ....(**व्यवधान**)...

उपसभापति : बैठिए, प्लीज, बोलिए ....(**व्यवधान**)...

श्री मूलचन्द मीणा : मैडम, कानून व्यवस्था के बारे में जब इस सदन के सदस्य शिवचरण जी कह रहे हैं और कानून व्यवस्था की रक्षा मुसलमानों पर गोली चलाकर ही कर सकती हो तो यह बुरी बात हैं। बिना वजह, जबर्दस्ती विशेष कौम होने के कारण,मुसलमान होने के कारण पुलिस उन पर गोली चलादे और कई लोगों को मारदे और उसके बाद आप कानून व्यवस्था की बात बताएं, तो मुझे बड़ा अफसोस होता हैं। मैं पूछना चाहता हूं शिवचरण जी जवाब दे दें कि अजमेर के अंदर भी ...(**व्यवधान**)...

श्री शिव चरण सिंह : कोई आदमी हो अगर कानून को अपने हाथ में लेता हैं तो कानूनन उसके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। उन्होने कब्रिस्तान पर कब्जा किया। ...(**व्यवधान**)...

श्री मोहम्मद सलीम : बेगुनाह लोगों को मारने के तरीके को शिवचरण जी जस्टिफाई करना चाहते हैं।

†شری محمد سلیم: بے گناہ لوگوں کو مارنے کے طریقہ کو شیوچرن جی جسٹیفائی کرنا چاہتے ہیں

श्री मूलचन्द मीणा : शिवचरण जी भूल जाते हैं अयोध्या में भी आपने ...(**व्यवधान**)...

†[ ]Transliteration in Arabic Script

<-उपसभापति : अभी आप उनकी बात सुन लीजिए। अगर आपके बोलने का समय आए तो आप क्लियर कर दीजिएगा। यदि कोई कब्रिस्तान पर कब्जा कर रहा हैं तो उसको दफन कर दिया उधर ही गोली मारकर। चलिए, आप बात खत्म करिए।

श्री मूलचन्द मीणा : शिवचरण जी भूल जाते हैं कि अयोध्या में मस्जिद गिराई, क्या उस समय भी कानून व्यवस्था नहीं बिगड़ी थी? जब मालती शर्मा जी मुसलमानों भाईयों की बातें कर रही थी तो मुझे बहुत अच्छा लग रहा था कि आज मालती जी के मुंह से मुसलमान भाईयों के बारे में कुछ सुन रहा हूं। जो मुसलमानों के लिए क्या-क्या नहीं करते थे लेकिन आज हाऊस में सुनने के बाद मुझे बड़ा अच्छा लगा हैं कि इस प्रकार का व्यवहार अगर मुसलमान भाईयों के साथ प्रेक्टिकल के रूप में करें तो अच्छा होगा, एकता रहेगी, अखंडता रहेगी, मन-मुटाव नहीं होगा तथा झगड़े नहीं होंगे।

महिलाओं के अत्याचार के बारे में भी मालती जी यहां कह रही थीं। यह हम भी जानते हैं कि महिलाओं की दयनीय स्थिति हैं। जिसको अबला के नाम से जाना जाता हैं, बहुत गरीब जिसको पुअर कौम कह सकते हैं, महिलाएं इतनी गरीब होती हैं कि इनके ऊपर अत्याचार होते रहते हैं। हम राजनीति के लिए किसी दूसरी सरकार पर आरोप लगाए इस बात को लेकर, यह एक अच्छी बात नहीं हैं। राष्ट्रपति जी के इस अभिभाषण में महिलाओं के लिए 33 परसेंट रिजर्वेशन की बात की गई हैं। राष्ट्रपति जी के पिछले अभिभाषण को भी पढ़े तो उसमें भी 33 परसेंट रिजर्वेशन की बात थी। आज सरकार बदलने के बाद भी 33 परसेंट रिजर्वेशन की बात राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के अंदर हैं। तो मैं माननीय सदस्या को यह कहना चाहूंगा कि जो सरकार बैठी हैं उससे मैं निवेदन करना चाहूंगा कि आज महिलाओं के आरक्षण की कोरी बात न करें। जल्दि से जल्दी इस आरक्षण की नीति को आप सदन में विधेयक बनाकर लाएं। महिलाओं को आरक्षण देने की बात हैं,महिलाओं को सुविधा मिलने की बात हैं, महिलाओं को आगे बढ़ाने वाली हैं। उसमें तो हम लोग पीछे रहने वाले नहीं हैं। यहां बिना बहस के उसका सहयोग करने के लिए तैयार हैं, आप लाइए तो सही विधेयक केवल राष्ट्रपति के अभिभाषण के अंदर यह बात कह देना, अखबारों में छपवा देना ही मुख्य मुद्दा रहा हैं, मुख्य उसूल रहे हैं आपके। भाषण कुछ देते हैं, करते कुछ हैं। क्योंकि लोगों को विश्वास नहीं हो रहा हैं इसलिए कई सदस्य यहां कह भी देते हैं। भ्रष्टाचार के बारे में आप बात करते हैं, सुखराम जी को आप साथ ले लेते हैं, तेरह दिन तक हाऊस नहीं चलता हैं और सुखराम जी के साथ गवर्नमेंट बन जाए तो ...आप लोगो को तो भ्रष्टाचार का मुद्दा छोड़ देना चाहिए, आपको कहना ही नहीं चाहिए क्योंकि भ्रष्टाचार से तो आपका कोई संबंध ही नहीं हैं।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी : आपको देख लेते हैं तो मुद्दा छूट जाता हैं।

श्री मूलचन्द मीणा : आप लोगों ने यह तय कर लिया कि इस देश की ...(**व्यवधान**)...

उपसभापति : अब जितने लोग बोलेंगे, इंटरप्शन करेंगे I am going to cut their names from the list. मूलचन्द जी आप खत्म कर दीजिए। आज फेयरवेल में भी जाना हैं।

श्री मूलचन्द मीणा : मैडम, में समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

SHRIMATI JAYANTHI NATRAJAN (Tamil Nadu): Madam Deputy Chairperson, I requested for this opportunity to be able to share a few thoughts with this House on the important situation that has now arisen before us after Shri Atal Behari Vajpayee has become the Prime Minister of India.

Madam, I have been listening to the debates, both in this House and in the other House, and I believe, as do a large number of our countrymen, that this is not just a process of transition but we could almost call it the turning point of our democracy. Madam, in the morning, Mr. Pranab Mukherjee was speaking; yesterday Mrs. Margaret Alva was speaking; in the other House several hon. Members have made the point about how far are you going to allow regional interests or parochialism or regional parties to dominate the nation scene which is going to be of primacy, which is going to be supreme. And then the argument goes on whether it will be the national parties that are best for this country, especially at the Central Government, or whether regional parties will have to have their say. Madap, this is something to which this House all of us and my party, the Tamil Maanila Congress which has been born in peculiar circumstances, we call ourselves a regional party with a national

outlook, deeply committed to the unity and integrity of India and committed equally to the needs and aspirations of the people in our State to whom we are very, very close, whose aspirations we represent better than many national parties have been able to do today has to now commit itself with very deep introspection about the role of national parties, of regional parties about what future role our polity is going to take as this from of a mandate which the people have handed down to us is implemented.

Madam, the National Agenda begins with a false promise. Mercifully that false promise has been dropped from the President's Address. "The BJP and its allies went to the people as a team and sought their support to govern, that they have unitedly won and that they have the mandate to govern." The first sentence in the National Agenda is clearly untrue.

Madam, I would like to share a few details with the House. I know that these details are common knowledge, but I would once again like to reiterate these few details so that they are able to understand what exactly we are talking about. Madam, 62 per cent of the electorate exercised their franchise in these elections. The Bharatiya Janata Party got 25.51 per cent of the votes; the Indian National Congress got 25.72, more than the Bharatiya Janata Party. The United Front that is the United Front before the Telugu Desam left it got 21.93 per cent, others and independents 11.20 per cent.

The BJP and its allies, therefore, got only 37 per cent of the votes which means that 63 per cent of the people of this country did not vote for the BJP. Therefore, I am at a loss to understand as to how my friends on the treasury benches are able to assert that the BJP has ....*(Interruptions)*.... I beg your par don........*(Interruptions)*.... Our party got 20 per cent and the AIADMK got 25 per cent. There is nothing to shout about it ....*(Interruptions)*.... I will come to that also ....*(Interruptions)*....

THE MINISTER OF PETROLEUM AND NATURAL GAS (SHRI K. RAMAMURTHY): I would like to know whether it held good for 1996 elections also.... *(Interruptions)*....

SHRIMATI JAYANTHI NATARA JAN: Madam, if Mr. Ramamurthy wants to make a speech, let him make .... *(In terruptions)... Madam,* if Mr. Ramamur thy and others want to speak ....*(Interruptions)*.... I am trying to make my argument. I cannot say what Mr. Ramamurthy wants me to say or what they want me to say. If I say something objectionable, you can take it out of the record. If they want to make a speech, let them make it ....*(Interruptions)* ....Madam, I resent strongly ....*(Interruptions)*....\ am trying to make an argument. I have many things, both about the Cabinet Minister and the AIADMK. I am totally refraining from it because I want to elevate the level of the debate. If they want me to lower the level of the deba te.... *(Interruptions)*....

SHRI N. THALAVAI SUNDARAM: Are you the Chairman of this House? ....*(Interruptions)*.... What right have you got to say all these things? ....*(Interrup-tions)*....

SHRI DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down.......... *(Interruptions)*.... Please take your seat ....*(Interruptions)*.... She has not said anything which is either derogatory or unparliamentary. She is only giving some facts and figures which I hope she has not fabricated ....*(Interrup-tions)*.... She is giving only those facts and figures which have been published in the newspapers ....*(Interruptions)*.... You cannot object to *her....(Interrup+-tions)*.... I do not agree with you. At any time when a lady Member gets up to speak on this side or that side, you people start shouting at her. I would not allow it....... *(Interruptions),*... Earlier also they were not allowing her. Let her address whichever way she likes. I can tell her what to do.

SHRIMATI JAYANTHI NATARA-JAN: Therefore, the BJP and its allies, however unpaliable this may be to the new firends that it has found in Tamil Nadu, got only 37 per cent votes which means 62 per cent of the Indians voted against the BJP. From 1996 the BJP has increased its tally by only 15 seats. As far as the allies of the BJP are concerned, the pre-election allies-we would not even talk about the post-election allies-they fought on separate manifestos. They fought on totally separate, mutually exclusive and contrary manifestos. Madam, to impose upon this mandate and call it a mandate to govern would be a travesty of democracy. I would like the treasury benches to answer if there is any one principle on which the BJP and its allies are mutually agreed. They accused the United Front of having come to power only for one reason to keep the BJP out of power. That was not true. But even if it had been true compared to that there is pursuit, a naked pursuit of power devoid of all principles, by the BJP and its allies which have come to power now. It was not even to keep the Congress out of power. But it was solely for the pursuit of power. Madam, nothing could be a worse travesty of polity, of the verdict of the people and of democracy than this. Therefore, it is to super-impose upon the verdict of this election that could be called the conscious choice of the Indian people. Madam, there have been coalition Governments in India from the time of Panditji. In 1946, in the Cabinet of Panditji seven out of 16 members were from the non-Congress parties. But the difference was that the non-Congress members were inducted because Panditji wanted their expertise. They consisted of giants like Dr. B.R. Ambedkar and Shya-ma Prasad Mookherjee. He took them into his Cabinet because of their expertise. He needed the expertise of Dr. Ambedkar and Shyama Prasad Mookherjee. But, how far have we fallen now? How far have we fallen from there? It is not a coalition where men of stature and women of stature have been included for noble reasons, for noble objectives in order to give this country a good governance. But, for all wrong reasons— ideologically bankrupt and politically dishonest compromises—this alliance has come into being. Therefore, there is not a single principle that they have commonly agreed upon. In order to save the time, I wirl not go into it. All my friends who have spoken before me, have spoken about the vast desparate motives with which these parties have fought the election. I was listening to arguments when my friends said, "We cannot trust you when you say that you believe in secularism. You have given up the very basis of your manifesto-Article 370, Hindutva and Uniform Civil Code. While my friends were saying this, I saw the hon. Prime Minister speaking in the other House. This was reported in newspapers. The hon. Prime Minister says, "When we had these principles, you did not like them. You called us names. When we have given up these principles, why are you upset? You should be happy." I am sorry. I have greatest respect for the hon. Prime Minister. But, this is to skip an answer. This is not an answer. The question is this, the problem is this and I have a right to say this, the B.J.P is no longer only a party, it is the B.J.P. which is leading the Government today. The Prime Minister is from the B.J.P. I have to say this When you took a manifesto to the people of India and those people of India, 25% of the people of India, voted for you that manifesto, you betrayed the very people who gave you 177 seats. How can we trust you?

Secondly, apart from what the B.J.P. itself has done, every ally of the B.J.P. has compromised on its basic principles. Every ally of the B.J.P says that they believe in Article 370, they believe in secularism, they believe in certain fundamental issues and every single issue of these allies was given up. They all came together for one reason alone and that is to stay in power at any cost. Madam, to say that the B.J.P. is a national party and that it has a mandate would be to make a complete mockery of this mandate and

this verdict. The B.J.P. is only nationally a national party because the truth is, today the B.J.P. is now geographically confined only to a very few regions in the country. The B.J.P., therefore, has had the time and was clever enough to make regional alliances with parties by devoid-ing the very principles on which the B.J.P. claimed that it stood for—clean governance, transparency and a corrup-tion-free governance. It may be granted, it made all these alliances with various regional parties and has somehow managed to cobble together some kind of a majority to form a Government today. Therefore, what we have before us is a distorted mandate. What we have before us is a distorted perception of the mandate and it is doubly distorted. Firstly, the distortion between the manifestoes on which the B.J.P. and its allies have separately won the election. Secondly, they are not following those manifestoes today and they have fully given them up for the sake of a National Agenda. And thirdly, it is doubly distorted because 62% of the people of the country did not want the B.J.P or its allies to come into power and because of this double distortion, the B.J.P. has the desired spectacle of this Government staying in power today. I would like to add that the National Agenda is full of pious platitudes and the less said about it is, the better. They say that they will provide food for all, they will provide education for all, they will provide housing for all and they have also said that they will provides bombs for all! Therefore, starting from education to bombs for all, the B.J.P. has now taken care of the entire nation's problems and if only they can manage to achieve, instead of simply controlling their despa-rate allies with many problems, their many blackmails and may promises, it is only a beginning to sort out a few of those problems. Madam, this country would be a very good place to start on the road to really mature democracy. Madam, I have only three more issues to raise and I would like to raise them as briefly as possible. According to me, three very important messages come out of this mandate. The first message is, if political parties fractured the polity on the basis of partisan interests with power as the sole agenda, citizens will fracture the verdict. I think it is wrong to say that all citizens of India have given us a fractured Parliament, a hung Parliament, a fractured mandate. I think that the citizens of India knew what they were doing. When political parties stand only for partisan interests, stand only for sectarian interests, come to power on the basis of religion, come to power on the basis of wrong isuess exciting the people instead of focusing on the noble goals of integration, development and democracy, the people of India will, therefore, give a befitting answer by which they fracture the political parties themselves and force them to sit together to do business.

Secondly, a very important issue is that in that process during which political parties are pitted against each other in the pursuit of power, they lose sight of the truly national goals, the truly national agenda. Let us talk for a minute and I plead with all my colleagues over here to stop for a minute to think what really is happening out there. While the political parties, while this legislature, while the Government of India, is engaged in fire-fighting, while we are fighting over the loaves and fishes of office, the power of the polity, the power of governance, the power of the legislature, has become considerably diluted. The power is now being exercised by the bureaucrats. The power is now being exercised by the judiciary. We have now completely abdicated all our responsibilities: We have completely abdicated our powers and the delicate constitutional balance that has been maintained in our Constitution is something that has fallen a victim to the narrow and sectarian interests that are being pursued in the name of power. This is a very important message that this fractured mandate has given to us and I think we should have the maturity to sit together and find a solution to all our problems.

Madam, thirdly, I would like to raise another very important issue. We, in the United Front until now consisted of allies like the Telugu Dcsam party and also of the National Conference. I am just wishing to make a point, a political point. I do not wish to score anything. It is very, very important to institutions. The point is we in the United Front had a message thai this country is of a truly federal character. In the truly federal character of this country, those parties (hat represent the States will have to have a proper role in governance in order to establish the federal nature of our polity. Therefore, this was a very important experiment for the country, where we believe that true federalism, proper Centre-State relations could be institutionalised in this form of coalition. Madam, only leaders belonging to certain parties come on the national television. They might have left the United Front for certain reasons. I am not here to question it. That is their decision. But, what I am trying to point out is that it is a very, very dangerous trend. It is a very dangerous trend when leaders of States, when Chief Ministers of States come in front of the nation and say that their political compulsions force them to go with whichever party is at the Centre. This is a very dangerous trend because it implies that if some other party is in power in the Centre, then those States Wi II ......*(Interruptions)*.......

SHRI SOLIPETA RAMACHANDRA REDDY (Andhra Pradesh): Madam, we never......*(Interruptions)*.......

THE DEPUTY CHAIRMAN: She did not take anybody's name. If she took anybody's name.... *(Interruptions)*............

SHRI SOLIPETA RAMACHANDRA REDDY: We never said that. We only wanted a Government at the Centre ....*(Interruptions)*..........

THE DEPUTY CHAIRMAN: But, she did not say .... *(Interruptions)*.......

SHRI SOLIPETA RAMACHANDRA REDDY: It is not that. We want stability. Wc never said that We only wanted a Government at the Centre.

THE DEPUTY CHAIRMAN: By saying that, you arc accepting what she is saying. So, let her speak. She did not take anybody's name. She is just making her point....... *(Interruptions)...*

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Madam, therefore, I think that the very institution of the Centre-State relations, the very federal structure of our Constitution will be endangered by this kind of attitude. For whatever parties support the BJP, that is their privilege. That is something which they have to answer to their electorate. But, for heaven's sake, I would plead with those leaders not to elevate political compulsions to the level of a noble philosophy. This is not like national integration or the unity of India. It is something which will deal a death blow to the truly fcdral structure of our nation. It is absolutely dangerous, particularly, in a State like Kashmir, which was founded on the principle of regional autonomy. Article 370 was the basis on which Kashmir became a part of India. And for the Chief Minister of Kashmir to say—I am sorry—"Because there is a particular parly at the Centre, I have to support them", it is an insult to the people of India and an insult to the people of Kashmir also.

5.00 P.M.

Many years ago, when Mr. Narasimha Rao said that if there is one party in Government at the Ccntrte and another party in Government in the State, it would be a mismatch, there was an uproar. Madam, he said this in a particular context. This is a much lower interpretation of what he said.

Therefore, I would plead with the leaders of the BJP as well the regional parties not to ditaw Centre-State relations and the federal character of our polity fall a victim to their narrow, sectarian, political, compulsions. For heaven's sake, don't elevate your political compulsions to the level of a noble philosophy.

Finally, Madam, I would like to say a word about my own State, Tamil Nadu. I am not going to talk about which Ministers were inducted, how they were inducted and what their record is. I only want to confine myself to saying something which is very important. The allies of the BJP in Tamil Nadu—I do not know what their real reasons were, or, what their false reasons were—apparently, insisted upon certain basic issues that were to be considered for the good of Tamil Ndu. These were: the solving of the Cauvery waters dispute; that Tamil should be made an Ol'ficical Languate; that the sixty-nine per cent reservation should be protected; that the height of the Periyar Dam should be raised.

SHRI VAYALAR RAVI: No. How can it be?

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: Madam, it is avcry serious point I want to make and I would make it very briefly. I know that we are coming to the end of the day's sitting. I would like to point out that both in the National Agenda and in the President's Address, none of these issues have been referred to. The Cauvery waters issue has been referred to in the most general terms. They talk about a national river water policy. We always had a national policy. This is nothing new. What we want is the implementation of the interim award given by the Cauvery Waters Tribunal, something on which the hon. Minister, Shri Rumamurthy, had resigned then. I do not know how they are sitting over there now and allowing ....

SHRI K. RAMAMURTHY: At least, I resigned then. But you have been in , power for eighteen months. Nothing was done.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: So what? I am only saying that you are sitting there in spite of the fact that the National Agenda of Governance has totally left this out, has whitewashed it and betrayed fully the people of Tamil Nadu.

Not only that, Madam. The reason why I want to refer to this is that, speaking in the Lok Sabha, the learned Prime Minister said: I know that these allies have made this issue about Cauvery, but how can wc implement the interim award of the Cauvery Waters Tribunal; how can I do it without consulting Karnataka?'. He spoke exactly the language of Karnataka. It is a total betrayal of the people of Tamil Nadu. This is what the Prime Minister said in the Lok Sabha. I saw it on the television. I read it in the newspapers. It is a complete betrayal of the people of Tamil Nadu.

Madam, if they believe in what they speak, if the allies of the BJP in Tamil Nadu rally believe in what they say, if they really stand for the cause of Tamil Nadu, they should no longer support this Government after what the hon. Prime Minister chose to say in the Lok Sabha. Therefore, Madam, I call upon the hon. Prime Minister to honour the promises that he made to the people of Tamil Nadu. He should make Tamil an Official Language, instead of just leaving it to a Commission. He should somehow restore honour to the polity. The only way he can restore honour to the polity is by dropping from his Cabinet those Ministers who have been chargeshected, whom he has taken, and who have filed affidavits in the court saying that they were unable to attend the court because of their preoccuption as Cabinet Ministers. At least, this much the Prime Minister can do for the people of India. If he cannot do even this much, I do not think the BJP should ever again talk about eradicating corruption, or, about clean governance. I think you have forfeited all your right to talk about eradicating corruption, or, about clean governance.

Thank you. Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, we have to adjourn at 5 o' clock. There are two Memebrs who are going

to make their maiden speeches. One is Mr. Onkar Singh Lakhawat from BJP. The other is Ms. Shabana Azmi, Nominated member. हमारी एक परम्परा हैं। जो कोई हमारे नये सदस्य पहली बार बोलते हैं, मेडेन स्पीच करते हैं तब हम घंटी नहीं बजाते हैं। आप कृपया 15 मिनट में खत्म करें।

SHRI V. P. DURAISAMY (Tamil Nadu): Madam, ladies first.

THE DEPUTY CHAIRMAN: She will speak. She will be the last. Let us hope that she will be the best.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: She has always been the best, Madam.

श्री ओंकरा सिंह लखावत (राजस्थान) : महोदया मैं राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव के समर्थन के लिए यहां खड़ा हुआ हूं। इस सदन की समृद्व परंपरा के पिछले कुछ दिनों से अपने आपको लाभान्वित करने और कुछ सीखने का मुझे अवसर मिला हैं। उसी क्रम के अंदर में अपनी बात आपके समक्ष रखने का प्रयास कर रहा हूं।

यह जो सदन हैं, लोकतंत्र का एक पवित्र मंदिर हैं और इसलिए मैं अपेक्षा करता हूं कि सदन में कहीं जाने वाली बात में न तोकिसी सही चीज को यहां छिपाया जाना चाहिए और न तो सदन में कोई गुमराह करने वाली बात कहने का कोई औचित्य, कोई अवसर यहां पर रहता हैं। इसलिए जब राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव के बारे में बात करें तो निश्चित रूप से इस सदन की पवित्रता, इसकी समृद्व परपंरा को हमको भूलने की कोई आवश्यकता अनुभव नहीं होती।

महोदया, राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण को सरकार की एक नीति, कार्यक्रम की दिशाओं के घोतक एक परिपत्र के रूप में कहा जाता हैं। यह कोई सम्पूर्ण इन्साक्लोपीडिया नहीं हैं। पिछले दो दिनों से मेरे विद्वान मित्रों ने और इस सदन के माननीय सदस्यों ने जिस तरह की वहां पर अपेक्षा रखी उससे ऐसा लगता हैं जैसे कोई सिनेमा में ट्रेलर देखने के समय कहे कि हमें पूरी फिल्म दिखा दी जाए। मैं कह सकता हूं कि भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों का एक परिपत्र हैं वह अभिभाषण, एक ऐसा दस्तावेज जिससे दिशा मालूम की जा सकती हैं। यदि सब कुछ जानना चाहते हैं तो कृपया पांच साल इंतजार कर लीजिए जब पूरी फिल्म पर्दे पर आ जाएगी। तब आप केवल संतुष्ट नहीं होंगे बल्कि सम्पूर्ण भारत गौरव अनुभव करेगा कि एक नयी दिशा और एक समृद्वशाली भारत के रूप में यह देश खड़ा है। इतना मुझे भरोसा हैं इस अभिभाषण को पढ़ने के बाद—इसमें जिस प्रकार के दिशा संकेतों का उल्लेख किया गया हैं।

महोदया, जिस समय यह सरकार आई उस समय की दशा और दिशाओं के बारे में यदि चिंतन नहीं किया जाए तो संभवतः अभिभाषण पर भाषण देते समय या इसका समर्थन और विरोध करते समय हम अपने साथ न्याय नहीं कर सकते, अपने सही प्रकार के दृष्टिकोण को प्रस्तुत नहीं कर सकते। जब से यह सरकार आयी हैं उसके पहले आठ पंचवर्षीय योजनाएं इस देश में पूरी हुई हैं और लगभग 12,90,348.3 करोड़, रूपए पंचवर्षीय योजनाओं और कुछ वार्षिक योजनाओं पर हिन्दुस्तान में खर्च हुआ। लेकिन उसके बाद के हालात क्या हैं यह हमसे छिपा हुआ नहीं हैं। जिस समय से श्री वाजपेयी जी ने प्रधान मंत्री पद का कार्य भार संभाला मैं उसके कुछ पूर्व की भी बात करना चाहता हूं। हम विदेशी कर्ज से डूबे हुए हैं। 1990 में जहां 1,30,199 करोड़ रूपए का हमारे ऊपर विदेशी ऋण था, 1996 के अंत तक जाते जाते 3,15,435 करोड़ रूपए की तो आतंरिक ऋण देनदारियां थी, जो बिल्कुल अलग हैं। कुछ मिलाकर भारत की स्थिति यह हैं कि हम केवल कर्जदार हैं। हमारे सिर पर कर्ज के अलावा कुछ नहीं हैं। हमारे बजट का पैसा विकास की योजनाएं तो दूर रहीं, ब्याज चुकाने के लिए पूरा नहीं पड़ता। ब्याज चुकाने के लिए भी हमें ब्याज उधार लेने की आवश्यकता पड़ रही हैं। इसलिए जब समृद्व भारत की बात हम करना चाहते हैं तो मैं इस सदन से निवेदन करना चाहता हूं कि भारत को कर्जमुक्त बनाएं। बिना विदेशी ऋण से मुक्ति के लिए, हम कैसे विकास कर सकते हैं। महोदया, इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि चाहे जिस पार्टी के हो सकते हैं, चाहे जिस विचार के हो सकते हैं, यह भारत का कर्ज क्या हम सबके ऊपर नहीं हैं। क्या अमा आदमी, गली और मुहल्ले में रहने वाले व्यक्ति के ऊपर इस कर्ज का असर नहीं होता हैं। यह कर्जमुक्ति किससे होगी? यह कर्ज मुक्ति तब होगी जब हम सम्पूर्ण भारत को जागृत करने का काम करेंगे। भारत में रहने वाले लोगों को इन भागाशाहों को हमको तैयार करना पड़ेगा। इसलिए आज जब मैं अभिभाषण के समर्थन में खड़ा हुआ हैं तो इस सदन के माध्यम से मैं प्रधान मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं यह स्वर्ण जयंती का वर्ष बहुत उपयुक्त वर्ष हैं जब लाल किले की प्राचीर से सारे भारत का आवाहन होना चाहिए कि जागो सारे भारतवासियों, भामाशाहों जरा खड़े हो जाओ, आओ तुम्हारे पास जो कुछ हैं सब लाओं

और इस विदेशी कर्ज से हिंदुस्तान को मुक्त करो। हिंदुस्तान पर एक पैसे का कर्ज नहीं होना चाहिए। हम हिंदुस्तान के लोगों का पैसा दें देंगे—5 साल में, 10 साल मे, 20 साल में दें देंगे और नहीं भी दिया तो इस हिंदुस्तान में देने वालों की बहुत समृद्व परंपरा रही हैं। हिंदुस्तान के लिए लोगों ने माथा कटवाया हैं, अपने प्राण दे दिए हैं। इसलिए धन देने वालों की कमी नहीं होगी। चीन के आक्रमण के समय लोगों ने तो जेवर ले जाकर, सोना ले जाकर दे दिया था। इसलिए इस असली खतरे को हमें पहचानना हैं।

इस राष्ट्रपति के अभिभाषण में जब हम स्वाभिमानी भारत की बात करते हैं,जब हम समृद्व भारत की बात करते हैं तो इसमें अपरोक्ष से छिपी हुई भावनाओं को समझने की हमें आवश्यकता हैं। हमारे मन की यह इच्छा हैं। सरकार के मन की भी इच्छा यह हैं कि यह भारत ऐसा भारत हो जो दुनिया के अंदर कोई मांगे तो हमसे मांगे। कोई उधार के लिए आए तो हमारे सामने आए। हमने दुनिया का कौन सा देश छोड़ा पिछले 50 साल में जहां कटोरा लेकर नहीं गये हों, जहां से हम रूपया लेकर नहीं आए। उधार लेकर घी पीने का काम 50 साल में बहुत किया हैं और उसी की यह स्थिति हैं, और उसके बावजूद भी बेरोजगारी की समस्या का समाधान नहीं हुआ। उसके बाद भी आज गरीबी की रेखा के नीचे जाने वाले लोगों की संख्या में वृद्वि बराबर अनियंत्रित होती जा रही हैं। इस देश में कोई स्थायी समाधान आज तक नहीं हुआ। इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे लिए सब से ज्यादा आवश्यकता यदि कोई हैं तो इस बात की हैं कि हम एक बार समूह के रूप में, एक समग्र राष्ट्र के रूप में खड़े हों ओर यह सरकार की इच्छा शाक्ति हैं। जब सहयोग की बात करते हैं, जब सहकारिता की बात करते हैं, जब कंशेंसस की बात करते हैं तो उसके पीछे भाव यह हैं कि सारा राष्ट्र एक साथ खड़ा हो। राष्ट्र किसके द्वारा खड़ा होगा? यह होगा माननीय सदस्य जिस पार्टी के साथ होंगे, आपके द्वारा, आप बनेंगे संवाहक, उस राष्ट्र की एकता के, सहयोग के और जिस दिन सहयोग के रूप में सारा राष्ट्र कड़ा होगा फिर देखिएगा इस दुनिया के नक्शे पर भारत का दृश्य क्या खड़ा होगा। इसलिए मैं एक निवेदन करना चाहता हूं कि आपने 50 साल में नीड और वांट्स में अंतर करने की कोशिश नहीं की हैं। हमने बहुत से लोगों की इच्छा पूर्ति आवश्यकता पूर्ति करने के काम को नहीं समझा और महोदया, इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यह जो असंतुलित विकास हुआ, यह जो रिजनल पार्टीज की आज लोग बात करते हैं, रिजनल पार्टीज क्यों बनी, उनके बनने की आवश्यकता क्यों हुई, जगह-जगहसे जो बराबर मांग उठती रही , लोगों के अंदर जिस प्रकार का वातावरण बनता रहा, अंसतोष खड़ा हुआ उसके पीछे यदि कोई जिम्मेदार हैं तो यह हैं असंतुलित विकास। हमने संतुलित विकास नहीं किया। हमने लोगों की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति 50 साल में नही की, बल्कि जहां हम पॉवर में थे वहां इच्छा शक्ति की पूर्ति करते रहे। इसलिए जो इच्छा पूर्ति करने वाले थे वे सिमट कर छोटे से हो गए और धीरे-धीरे छोटे लोगों ने अपनी रिजनल पार्टीज, अपनी क्षेत्रीय पार्टी अपनी भाषा के आधार पर, क्षेत्र के आधार पर, विकास के आधार पर आवश्यकता के अनुसार पार्टियां खड़ी हो गई। इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यह सरकार चाहती हैं कि संपूर्ण देश का संतुलित विकास हो और संतुलित विकास के लिए हमारी आवश्यकताओं और प्रायरिटीज को तय करना पड़ेगा और प्राथमिकता और आवश्यकता का उल्लेख इस माननीय राष्ट्रपति के अभिभाषण के अंदर हैं। इसलिए मैं माननीय राष्ट्रपति जी के भाषण का पृष्ठ संख्या 2 पैरा 6 की ओर माननीय सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं जिसमें उन्होने कहा हैं कि भारतीय होने का गौरव हम अनुभव करें। भारतीय होने का गौरव अनुभव करने के पीछे क्या हमारे पास धन हो सकता हैं दौलत हो सकती हैं? हमारे पास सब कुछ हो सकता हैं, क्योकि, सर्वस्व न्योछावर करने की मन में भावना नहीं थी इसलिये हिन्दुस्तान को 50 साल में कंगाली के किनारे पर खड़ा कर दिया। 1947 से पहले लोग सिर्फ फांसी के फंदे पर झूलते थे और आज एंटी करप्शन के ट्रैप में पकड़े जा रहे हैं। 50 साल में यह स्थिति क्यों खड़ी हो गई? वह इसलिए खड़ी हो गई कि हमने हिन्दुस्तान के लिए इस हिन्दुस्तान की धरती से, इस राष्ट्र से, इस देश से लोगों को कैसे जुड़ना चाहिए, इसके साथ में लोग कैसे जुड़े यह भाव धीरे-धीरे समाप्त हो गया। इसलिए यह एजेंड़ा कहता हैं, और राष्ट्रपति जी के भाषण में ठीक कहा हैं कि हमें भारतीय होने का गौरव अनुभव करना चाहिए। इसलिए मैं एक प्रसंग की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। महाराणा प्रताप का जिस समय युद्व चल रहा था जंगल में थे, बहुत विपदा में थे। खाने को रोटी नहीं थी, घास की रोटी खा रहे थे। बच्चे के हाथ में से घास की रोटी भी वन बिलावड्रा ले करके चला गया। तो मानसिंह कहने लगा कि चलो, समझौता कर लो, क्या फर्क पड़ता हैं अपनी थोड़ी सी पगड़ी को नीचा कर लो। सोने की थाली में भोजन करोगे, महलो में रहोगे और सुख और आनंद भोगोगे। महाराणा प्रताप ने जो उत्तर दिया मैं आज

चाहता हूं वह सदन सारे राष्ट्र में खड़ा हो करके वह उत्तर आज क्यों नहीं दे सकता? महाराणा प्रताप ने कहा,

"उमने ही भकूंगा पर बवर्ची खाने पै तकूंगा ना,

मुझे जंगल के पेड़-पौधों के पत्ते खाने मंजूर, परन्तु मुझे अपनी पगड़ी नीचे करके और घोड़े पै दाग लगावा करके और अखंडता और एकता की खातिर उसकी कीमत के ऊपर मुझे स्वादिष्ट भोजन अच्छे भोजनालय का पंसद नहीं हैं। और मानसिंह वहां से लौट गए। आज हिंदुस्तान में यह भाव जागृत करने की इच्छा हैं क्या? परन्तु इस अभिभाषण में इसका उल्लेख हैं। इसमें यह भावना छिपी हुई हैं। इसलिए मैं कहता हूं स्वाभिमानी, वैभवशाली भारत की आवश्यकता हैं और इसलिए जब भय की बात कहीं गई आपको भय मुक्त होना चाहिए तो भय केवल आंतरिक नहीं, विदेशी भय से भी मुक्त चाहिए। आज दुनिया के बड़े-बड़े देश हिन्दुस्तान को टर्न डिक्टेट करें। इंटरनेशनल मानिटरी फंड हिनदुस्तान का बजट तय करे, बड़े-बड़े देश हमारी आणविक क्षमता, परमाणु बम बनाने के बारे में प्रश्न करेंगे। क्यों किसलिए? सोने की चिड़िया? सोने की चिड़िया हैं ।यहा से हिन्दुस्तान से, हिन्दुस्तान ने दुनिया को सब कुछ दिया। हमने ज्ञान दिया, विज्ञान दिया, हमने उनको सब कुछ दिया। शिक्षा दी और आज वह हमको टर्म डिक्टेट करते हैं। इसलिए मैं कहता हूं कि केवल आंतरिक भय से मुक्ति नहीं, भारतीय जनता पार्टी आंतरिक भय से मुक्ति नहीं, भारतीय जनता पार्टी आंतरिक भय को इस आतंकवाद को जहां समाप्त करना चाहती हैं वहां बाहर के लोगों के इस वर्चस्व और इस मानसिकता के ऊपर भी अंकुश लगाना चाहती हैं।

अब हिंदुस्तान को किसी तरह से डरने की आवश्यकता नहीं हैं। अगर सहयोग करेंगे तो सहयोग लेंगे और अगर नहीं करेंगे तो उन के बिना चलेंगे। अगर बीच में बाधा डालेंगे, जरा बच के चलेंगे और अगर रोड़ा बनेंगे तो ठोकर मारकर एकतरफ कर के भी हिन्दुस्तान को आगे ले जाने की क्षमता रखते हैं। यह हैं इस भय के पींछे की भावना। इसलिए राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में इस बात का उल्लेख किया गया हैं जिसका मैं यहां निवेदन करना चाहता हूं। महोदया, यहां बहुत कुछ बाते कहीं गयीं। मुस्लिम भाइयों के बारे में एक निवेदन करना चाहता हूं । मुसलमान भाइयों से हमारा विरोध हैं और हमारा उन से विरोध हैं, ऐसी बातों का यहां उल्लेख हुआ हैं। मैं कहना चाहता हूं कि तीसरे चौकीदार को झगड़ा करने की जरूरत क्या है। हम ने इस बात का फैसला किया हैं, हमारे मन में भावना हैं, हमारे मन मे सोच हैं, हमारे मन में आकांक्षा हैं कि हिन्दुस्तान के मुस्लिम भाइयों को साथ लिए बिना हिंदुस्तान आगे नहीं बढ़ सकता। हम उन के कंधे-से-कंधा मिलाकर इस समृद्व राष्ट्र को आगे बढ़ना चाहते हैं फिर आप को क्या परेशानी हैं? क्यों उन को डरा रहे हैं? मुसलमान भाइयों बी.जे.पी. वाले खा जाएंगे, मुसलमान भाइयो आर.एस.एस. वाले आप को नुकसान पहुंचा देंगे या विश्व हिंदू परिषद वाले यह कर देंगे। जब हम ने फैसला कर लिया हैं कि हम और ये मिलकर हिन्दुस्तान में रहेंगे तो श्रीमान् जी आप तीसरे की चौकीदारी की आवश्यकता नहीं हैं। कृपया विराजे रहिए। हम ने फैसला किया हैं। यह आने वाला समय बताएगा और इसलिए मैं इस घटना का उल्लेख करना चाहता हूं कि यहां आर.एस.एस. का बहुत बार उल्लेख हुआ हैं। मैं बहुत ज्यादा उस की परिभाषा में नहीं जाना चाहता। मैं उस की विशेषताओं का गुणगान भी नहीं करना चाहता, सिर्फ एक बात रखकर बतलाना चाहता हूं कि आतंकवाद जब पंजाब के अंदर खूब अपना पांव पसार रहा था, निर्मम हत्याएं बहुत जोरों से हो रही थीं, उस समय संघ की शाखाओं पर बहुत हमले हुए। इतने हमले हुए कि पूरी-की-पूरी शाखा में खड़े स्वयं-सेवकों को मार दिया गया तब परम् पूज्य वाला साहेब देवरस जोकि उस समय सर-संघचालक हुआ करते थे, संघ के स्वयं-सेवक उन के पास गए और कहने लगे कि हमारे ऊपर हमला हो रहा हैं। हम को क्या करना चाहिए, आप आदेश दें। उन्होने एक बात कहीं और उपसभापति महोदया, मैं सदन के माननीय सदस्यों से एक निवेदन करना चाहूंगा कि उन्होने जो उत्तर दिया वह सोचने के लिए पर्याप्त हैं। बाला साहेब देवरस ने कहा कि, रोटी खाते-खाते कभी दांत के नीचे जीभ आ जाती हैं तो पत्थर से उस दांत को तोड़ते नहीं हैं भाई, रोटी सावधानी से खाते हैं। उस के बाद संघ के प्रचारकों को पंजाब में भेजा, पार्टी के कार्यकत्ताओं को पंजाब में भेजा और कहा कि जाओ केशधारी और सनातनियों के बीच में बैठो, संबंध को मधुर करो। महोदया, यह बात मैं नहीं कहता, पंजाब के तत्कालीन मुख्य मंत्री स्वर्गीय श्री बेअंत सिंह ने कहा कि पंजाब में केशधारी सिख बंधुओं और हिंदुओं के बीच में एकता करने की बात किसी ने कही हैं तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। यह बात उन्होने कहीं और इसलिए महोदया, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जब बात कहीं गयी तो उस के पीछे भावना क्या थी? उस के पीछे की भावना को समझने की कोशिश करें।

उपसभापति : आप के 15 मिनिट खत्म हो गए हैं।

श्री ओंकार सिंह लखावत : मैडम, मैं संक्षिप्त में अपनी बात पूरी करता हूं।

उपसभापपति : अभी बोलने के लिए दूसरी महिला बैठी है।

श्री ओंकार सिंह लखावत : इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस बात को समझें कि आपस में मिलजुलकर आगे बढ़ने की बात उस में से होगी।

भूख के बारे में बात कहीं गयी हैं। इस सर्वोच्च प्राथमिकता, सहायता और सुविधाएं देने के बारे में इस अभिभाषण में बात कहीं गयी हैं। जहां हर परिवार को खाद्यान्न और सुरक्षा की बात इस में कही गयी हैं, रोजगार के अवसरों की बात इस में कहीं गयी हैं, तो हमें मानकर चलना चाहिए कि इस में से भूख भी कम होगी, रोजगार के साधन इस में से बढ़ेगे। परंतु आज स्थिति यह बनी हुई हैं कि लगभग 38.74 मिलियन नौजवान लोग बेरोजगारी की लाइन में खड़े हैं। इसलिए हमें बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं और प्रत्येक गांव को पीने के पानी की सुविधा देने की बात अभिभाषण में कहीं गयी है। महोदया, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस देश में 1 लाख 25 हजार ऐसी बस्तियां हैं जिन को पीने का पानी उपलब्ध नहीं है। इसलिए जब समृद्धि की बात करे, जब अंत्योदय की बात करते हैं तो कृषि के क्षेत्र पर साठ प्रतिशत खर्च की बात कहीं गयी हैं। हम को यह तो सोचना पड़ेगा कि हमारे खेतिहार किसान को कितने दिन यहां पर काम मिलता हैं। आज हालत यह हैं कि 14 मिलियन हैक्टेयर सिंचाई क्षमता वाला पानी बेकार पड़ा हैं और 70 प्रतिशत किसानों के खेतों को पानी उपलब्ध नहीं हो रहा हैं। इसलिए जल-संग्रहण की योजनाओं को आगे ले जाने की बात की जाएगी। इसलिए महोदया, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जब किसान की फसल की बीमा होगी तो निश्चित रूप से वह उत्पादन के क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ सकेगा।

महोदया, मैं केवल दो मिनिट में अपनी बात पूरी करना चाहूंगा और इसलिए यह निवेदन करना चाहता हूं कि यहां जितने भाषण दिए गए, उन भाषाणें के बाद मुझे एक घटना याद आती हैं। मेरे एक पड़ोसी मित्र थे जो कि कॉफी दिनों बाद अपने घर में आए। वह आसाम में काम करते थे । उन्होने घर आकर अपने लड़के की पिटाई शुरू कर दी। बोले, तू सातवीं में गणित, सामजिक ज्ञान, भूगोल सभी विषयों में फेल हो गया। लड़के ने कहा कि पिता जी मेरी तो परीक्षा ही नहीं हुई, मुझे क्यों पीट रहे हों? फिर लड़के की मां ने कहा कि इस बच्चे की परीक्षा कहा हुई, मार्कशीट नहीं आई तो क्यों पीट रहे हो? उन्होने कहा—मैंने इसकी मार्कशीट देखी हैं। तू लड़के को ज्यादा बिगाड़ती रहती हैं"। लड़के की मां ने पूछा- श्रीमान् जी, कहां मार्कशीट देखीं"। उन्होने कहा- वहां टेबल पर कमरे में पड़ी थी"। लड़के की मां ने कहा- "यह तो मैंने 35 साल पुरानी ऊपर टांड से, बोरी में से निकाली हैं। यह तो आपकी मार्कशीट हैं, यह लड़के की मार्कशीट नहीं हैं"।

महोदया, मैं यही निवेदन कर रहा था कि वह जो कुछ मार्कशीट नजर आ रही हैं, मेरे मित्रों के भाषण में बात आपको नजर आ रही हैं, यह तो पचास साल की उनकी मार्कशीट है। भारतीय जनता पार्टी या श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने तो अभी एक महीने भी शासन नहीं किया हैं। इस देश पर, केन्द्र में तो कांग्रेस और कांग्रेस की संस्कृति के उत्पादकों ने आज तक शासन किया हैं। हमारे बारे में क्यों सोचते हो? जरा वार्षिक परीक्षा हो जाने दीजिए, त्रैमासिक परीक्षा हो जाने दीजिए और पांच साल की परीक्षा के बाद आप हमारी कापी भी जांच लीजिएगा। पचास साल की उधर की कापी हमारे सामने होगी, आप जांच लीजिएगा।

महोदया, हम विकास की बात कर रहे हैं .....(**समय की घंटी**) ... महोदया, दो मिनट में अपनी बात खत्म करूंगा।

उपसभापति : एक सेकेण्ड। देखिए, मैंने हाऊस बढ़ा दिया। आज रिटारिंग मैम्बर्स की पार्टी हैं। वहां जाना हैं सबको।

श्री ओंकार सिंह लखावत : मैडम, दो मिनट।

उपसभापति : नहीं, आपने अपना भाषण अच्छा बोल दिया। सब की ताली बज जाने दीजिए ताकि दूसरी महिला सदस्य को भी मौका मिले।

श्री ओंकार सिंह लखावत : महोदया, मैं समाप्त कर रहा हूं। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि इस भारत की 1,18,000 वर्ग किलोमीटर भूमि पर विदेशियों ने कब्जा कर रखा हैं। अगर मजबूत सरकार नहीं हुई, इच्छाशक्ति की सरकार नहीं हुई तो कौन लाएगा 78,000 वर्ग किलोमीटर भूमि पाकिस्तान से निकालकर, कौन 38,000 वर्ग किलोमीटर भूमि चीन से छीनकर? और तो और पाकिस्तान ने हमारी 5120 वर्ग किलोमीटर भूमि चीन को भेंट में दे दी और 50 साल तक सरकार देखती रह गई। इसलिए मै कहता हूं, महोदया, कि एक सशक्त सरकार की आवश्यकता हैं औरा वह सशक्त सरकार होगी श्री वाजपेयी जी के नेतृत्व वाली सरकार।

महोदया, आखिर में मैं एक निवेदन कहकर अपनी बात को पूरी करना चाहता हूं कि यह जो अभिभाषण हैं यह अंधेरे से प्रकाश की ओर बढ़ाने वाला हैं, यह दसों

ft दिशाओं में देश को आगे बढ़ाने वाला हैं। इसलिए मैं कहता हूं—

हिम्मत कीमत होय, बिन हिम्मत कीमत नहीं।

आदर करे न कोय, रद्द कागद सो राखिया।

महोदया, कहा गया हैं कि अगर हिम्मत हो तो सभी आदर करेंगे। इसलिए शाक्तिशाली, हिम्मत वाला देश हमारा भारत खड़ा हो तो दुनिया हमारा आदर करेगी, नहीं तो रद्दी कागज की तरह, मित्रों, न यह दुनिया भारत को पूछेगी और न भारत के नागरिक को पूछेगी। भारत मजबूत तब होगा, जब आप और हम सब मिलकर संकल्प लेंगे। इसलिए, महोदया, मैं यह मानता हूं कि हमको कहीं न कहीं बैठकर आपस में एकता की बात करनी चाहिए और एकता के पीछे भाव केवल हमारी सरकार में ही एकता लाने का नहीं हैं।

महोदया, एक बात मैं और कहना चाहता हूं।

उपसभापति : नहीं, बस हो गई आपकी बात। मैं एलाऊ नहीं कर रही। शबान जी, आप खड़े हो जाइए।

श्री ओंकार सिंह लखावत : महोदया, मैं खत्म कर रहा हूं । एकता की बात ...

उपसभापति : यह बहुत हो गया। अब आप बैठ जाइए।

श्री ओंकारा सिंह लखावत : महोदया, एकता की बात का मतलब यह नहीं हैं कि केवल सरकार की बात उसमें हों। अंत में, आपने जो मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए धन्यवाद और मैं इस धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। बहुत बहुत धन्यवाद

SHRIMATI SHABANA AZMI (Nominated): Thank you, Madam Deputy Chairman.

It comes as a complete surprise to me that housing as an acute human need has not become an emotive issue for us. I noticed with dismay when, in the President's Address, he mentioned housing for all, it evoked no response from the House. When he talked about children's rights, we clapped; when he talked about women's rights, we clapped; but when he talked about housing, there was no response, hence it becomes imperative that I build my argument in some detail.

हमको आजादी आधी रात को मिली थी और सबेरा आज तकनहीं हुआ। पिछले दिनों मैं एक यूनिवर्सिटी की डिबेट में गई थी, जहां एक नौजवान डिबेटर की ओपनिंग लाइन तीन की तरह मेरे दिल में चुभ गई। मुझे ऐसा लगा, जैसे यह जजबात उस औरत के हैं जिसकी झुग्गी-झोपड़ी को तोड़ दिया गया हैं, यह जजबात उस आदमी के हैं, जो नौकरी होने के बावजूद घर नहीं बना सकता अपना, यह जजबात उस बच्चे के हैं, जो घर न होने की वजह से स्कूल नहीं जा सकता।

Tonight, millions in my country are going home to sleep on the streets, on the pavements, ia the railway stations or under a piece of plastic held by a stick called a 'jhuggi-jhonpri'. Tomorrow, they will wake up to the lack of water, sanitation and electricity. Thousands of others will wake up to the insecurity and the threat of their jhuggi-jhonpris being demolished. Is this the 'tryst with destiny'?

Madam, as custodians of this nation, it is our responsibility intellectually, morally, politically and emotionally to respond to this basic need, basic human right to shelter. Can we provide shelter for all by the year 2020? My answer is an unequivocal 'yes'. But we must respond by changing our perspective and by providing a political will. We need to change our perspective by looking at housing as a process of social reorganisation, as a process of social reorganisation that can develop strong. and meaningful relationships, cutting across communities and castes, gender and having an effect on families, communities and neighbourhood. We need to look at housing not only as a consumption expenditure but as something that is going to be a productive investment. We need to look at housing not only as an end in itself but as a propeller of the economy and an employment generator. We need to look at housing not as an end in itself but as a vehicle of removing poverty. Conversely, we have to look at homelessness as a breeder of social turmoil, crime and disease. Those who live on the streets or in crowded unhygienic homes, cannot rise to the level of their human potential, either emotionally or intellectually or even culturally or even as a family. In fact,

inadequate and insecure shelter can lead to political and social disability which greatly hampers the economic growth. Housing, in all its aspects, holds an enormous opportunity for increasing economic activity, accelerating construction, creates employment, not only in the building industry itself, but in all the other related industries, whether it is that of building materials or infrastructure or transportation, marketing, durable goods and so on. It has been estimated that one rupee invested in the construction of houses will add one extra rupee to the national income by this backward linkage with other industries. Out of every job created in the construction industry, two other jobs will materialise. This has a multiplier effect of three, according to the estimates of the I.L.O. and the World Banlc in employment generation. Construction industry, especially in the informal sector, is also a big employer of unskilled labour and may provide employment up to 10 per cent of the work force. It is probably the fastest way of pulling out illiterate and unskilled adults from the clutches of abject poverty. In addition, a home becomes a place for employment. I know through my own work in Bombay that almost 25 per cent, of households use their homes as places for income generation, whether it is in the manufacturing of garments, leather, silver foil, *pappar, bindis* etc. Thus the production value of a house becomes more than the sum total of its bricks and mortar. Hardely any other investment in this nation has this enormous multiplier effect. Harly any other investment in the nation has this magnitude of political, social and emotional benefits. Nations across the world arc spending from 2 per cent to 8 per cent of the GDP on their housing. If we spend even 3 per cent to 3'/2 per cent of our GDP, we should be able to provide shelter to all by the year 2020. What we need is the vision and the political will. Let the new Government take the lead to regulate and enable a macro economic housing policy, in cooperation with other Government organisations, the private sector, the formal sector. the informal sector, financial institutions, the NGOs and CBOs. This enabling policy should aim at harnessing the collective strengths of the people and make them actively participate in their own housing activity. The policy should envisage that the role of the public sector is to provide regulatory framework, infrastructure, management of land resource and sustainable management of the environment. But it is important that the government act both as facilitator and as builder because diverse urban situations demand that the Government continues to build for certain sections of society.

The Government must itself invest and provide incentives to invest, in low-cost housing because this provides employment, 20 per cent more employment per unit of investment and six times more dwellings can be built with the same investment, according to the UNCHF and the ILO. If the experience of the Gramin Banks is any indication, we will be pleasantly surprised to discover that consumers of low-cost housing can bear the existing, prevailing market rates of interest. Such investment will not enhance the Budget deficit and may also not be inflationary. This enabling policy should recognise that women are both home-makers as well as income-earners and bear the maximum brunt of homclcssncss. The policy should give Preferential attention to women in the construction industry and should involve them in management and strategic planning. It should improve women's access to finance and land tenure. Security of land tenure for the women of the house may be the single most important stimulus to growth in low-cost housing. The paradox of-a woman who owns a country but not a home, can be resolved by providing the only missing link of the struggle which is an intrepid political will. Let us pledge that there should be no homeless woman, man or child by the year 2020 and thus open a window of opportunities for every Indian in the edifice of our nation.

I conclude with a couplet from my father Kaifi Azmi Sahib's peom "Makan":

“आज की रात बहुत गरम हवा चलती हैं,

आज की रात न फुटपाथ पर नींद आएगी,

सब उठो, मैं भी उठूं, तुम भी उठो, तुम भी उठो,

कोई खिड़की इसी दीवार में खुल जाएगी”।

THE DEPUTY CHAIRMAN: With the last speech we adjourn the House till 11 o'clock tomorrow.

The House then adjourned at thirty two minutes past five of the clock till eleven of the clock on Wednesday, the 1st April, 1998.